॥ श्री गणेशाय नमः ॥

जन्मपत्रिका

Sample Pdf
12/05/1990 12:30 PM
Mumbai, Maharashtra, India

निर्मित

Astrologer Karan Sharma

WORLD'S BEST ASTROLOGER & PANDIT
(ISO 9001 : 2015 CERTIFIED ASTROLOGER)

सामान्य कुंडली विवरण

सामान्य विवरण

जन्म दिनांक	12/05/1990
जन्म समय	12:30
जन्म स्थान	Mumbai, Maharashtra, India
अक्षांश	19 N 04
देशांतर	72 E 52
समय क्षेत्र	+05:30
अयनांश	23:43:21
सूर्योदय	6:5:12
सूर्यास्त	19:4:36

घात चक्र

महीना	पौष
तिथि	2,7,12
दिन	बुधवार
नक्षत्र	अनुराधा
योग	व्याघात
करण	नाग
प्रहर	1
चंद्र	12

पंचांग विवरण

तिथि	कृष्ण तृतीया
योग	शिव
नक्षत्र	ज्येष्ठा
करण	वणिजा

ज्योतिषीय विवरण

वर्ण	विप्र
वश्य	कीट
योनि	मृग
गण	राक्षस
नाड़ी	आदि
जन्म राशि	वृश्चिक
राशि स्वामी	मंगल
नक्षत्र	ज्येष्ठा
नक्षत्र स्वामी	बुध
चरण	3
युञ्जा	प्रभाग
तत्त्व	जल
नामाक्षर	यी
पाया	ताम्ब्र
लग्न	कर्क
लग्न स्वामी	चन्द्र

ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्री	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	भाव
सूर्य	--	मेष	27:34:30	मंगल	कृतिका	सूर्य	दसवां
चन्द्र	--	वृश्चिक	24:38:32	मंगल	ज्येष्ठा	बुध	पाँचवा
मंगल	--	कुम्भ	22:13:24	शनि	पूर्व भाद्रपद	गुरु	आठवाँ
बुध	हाँ	मेष	15:02:50	मंगल	भरणी	शुक्र	दसवां
गुरु	--	मिथुन	15:12:56	बुध	आर्द्रा	राहु	बारहवां
शुक्र	--	मीन	15:26:30	गुरु	उत्तर भाद्रपद	शनि	नौवां
शनि	हाँ	मकर	01:34:11	शनि	उत्तर षाढ़ा	सूर्य	सातवाँ
राहु	हाँ	मकर	17:47:00	शनि	श्रावण	चन्द्र	सातवाँ
केतु	हाँ	कर्क	17:47:00	चन्द्र	अश्लेषा	बुध	पहला
लग्न	--	कर्क	26:44:32	चन्द्र	अश्लेषा	बुध	पहला

सूर्य
मेष
कृतिका

सम

चन्द्र
वृश्चिक
ज्येष्ठा

सम

मंगल
कुम्भ
पूर्व भाद्रपद

योगकारक

बुध
मेष
भरणी

हानिप्रद

गुरु
मिथुन
आर्द्रा

लाभप्रद

शुक्र
मीन
उत्तर भाद्रपद

हानिप्रद

शनि
मकर
उत्तर षाढ़ा

हानिप्रद

राहु
मकर
श्रावण

--

केतु
कर्क
अश्लेषा

--

जन्म कुंडली

लग्न कुंडली

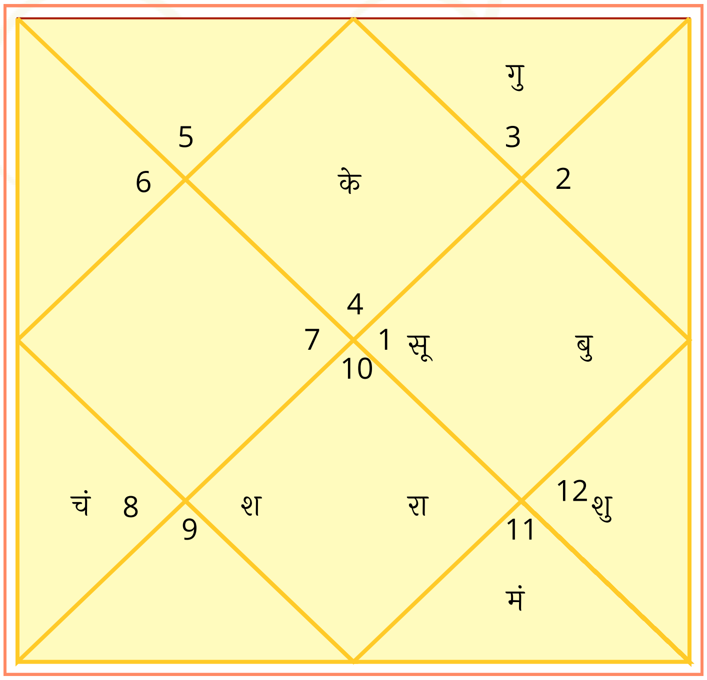

व्यक्ति के जन्म के समय आकाश में पूर्वी क्षितिज जो राशि उदित होती है, उसे ही उसके लग्न की संज्ञा दी जाती है। जन्म कुण्डली में 12 भाव होते है। इन 12 भावों में से प्रथम भाव को लग्न कहा जाता है। कुण्डली में अन्य सभी भावों की तुलना में लग्न को सबसे अधिक महत्व पूर्ण माना जाता है। लग्न भाव बालक के स्वभाव, रुचि, विशेषताओ और चरित्र के गुणों को प्रकट करता है।

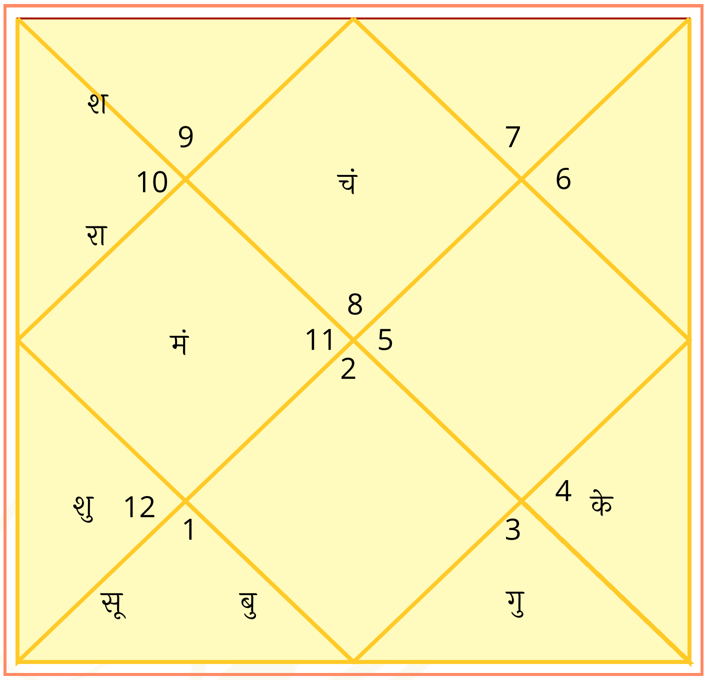

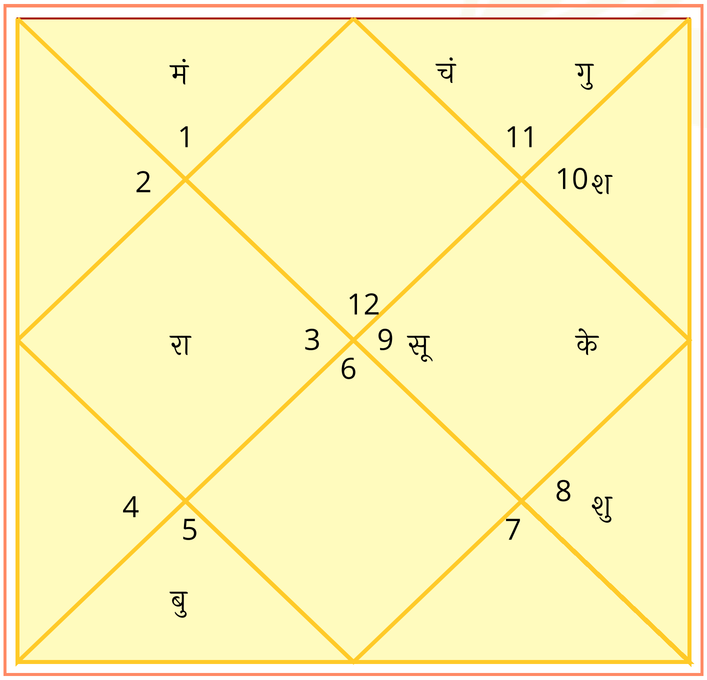

चंद्र कुंडली

लग्न कुंडली के बाद जिस राशि में चंद्रमा होता है उसे लग्न मानकर एक और कुंडली का निर्माण होता है जो चन्द्र कुंडली कहलाती है। चंद्र कुंडली का भी फलित ज्योतिष में लग्न कुंडली जितना ही महत्व है। लग्न शरीर, तो चंद्र मन का कारक है और वे एक दूसरे के पूरक हैं।

नवमांश कुंडली

नवांश कुण्डली को नौ भागों में बांटा जाता है, जिसके आधार पर जन्म कुण्डली का विवेचन होता है। नवांश कुण्डली में यदि ग्रह अच्छी स्थिति या उच्च के हों तो वर्गोत्तम की स्थित उत्पन्न होती है और व्यक्ति शारीरिक व आत्मिक रुप से स्वस्थ हो शुभ दायक स्थिति को पाता है।

भाव सन्धि

लग्न - 26:44:32 दशम भाव मध्य - 26:23:36

भाव	जन्म राशि	भाव मध्य	जन्म राशि	भाव संधि
1	कर्क	26:44:32	सिंह	11:41:02
2	सिंह	26:37:33	कन्या	11:34:04
3	कन्या	26:30:34	तुला	11:27:05
4	तुला	26:23:36	वृश्चिक	11:27:05
5	वृश्चिक	26:30:34	धनु	11:34:04
6	धनु	26:37:33	मकर	11:41:02
7	मकर	26:44:32	कुम्भ	11:41:02
8	कुम्भ	26:37:33	मीन	11:34:04
9	मीन	26:30:34	मेष	11:27:05
10	मेष	26:23:36	वृष	11:27:05
11	वृष	26:30:34	मिथुन	11:34:04
12	मिथुन	26:37:33	कर्क	11:41:02

चलित कुंडली

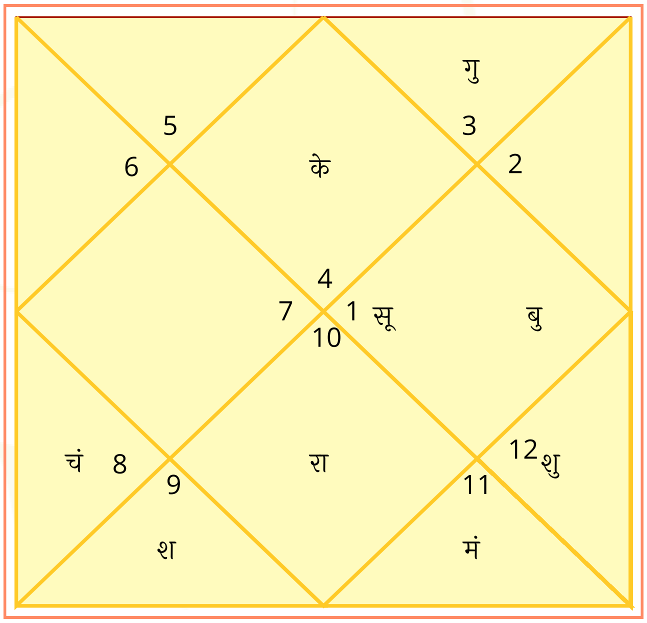

लग्न कुंडली का शोधन चलित कुंडली है, अंतर सिर्फ इतना है कि लग्न कुंडली यह दर्शाती है कि जन्म के समय क्या लग्न है और सभी ग्रह किस राशि में विचरण कर रहे हैं और चलित से यह स्पष्ट होता है कि जन्म समय किस भाव में कौन सी राशि का प्रभाव है और किस भाव पर कौन सा ग्रह प्रभाव डाल रहा है।

famouspandit.com

वर्ग कुंडली

सूर्य कुंडली

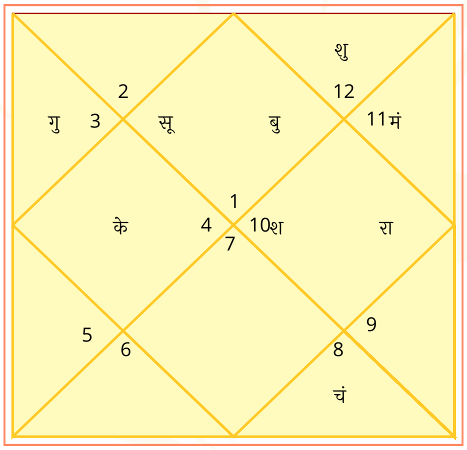

शरीर, स्वास्थ्य, रचना

होरा कुंडली

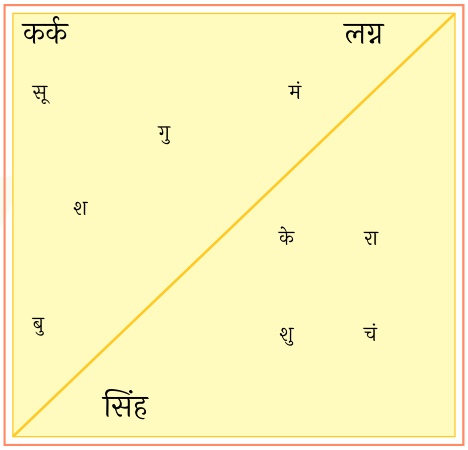

वित्त , धन -सम्पदा, समृद्धि

द्रेष्काण कुंडली

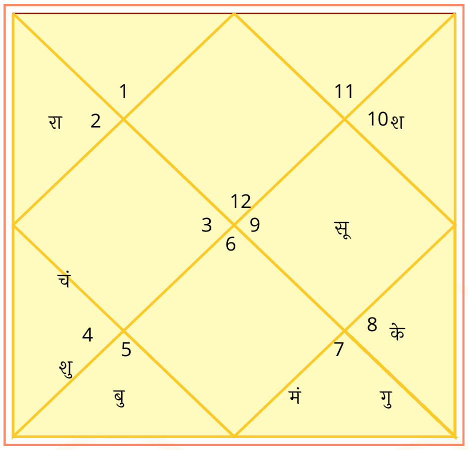

भाई बहन

चतुर्थांश कुंडली

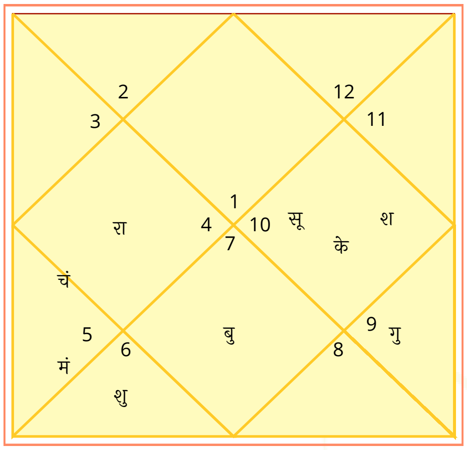

भाग्य

पंचमांश कुंडली

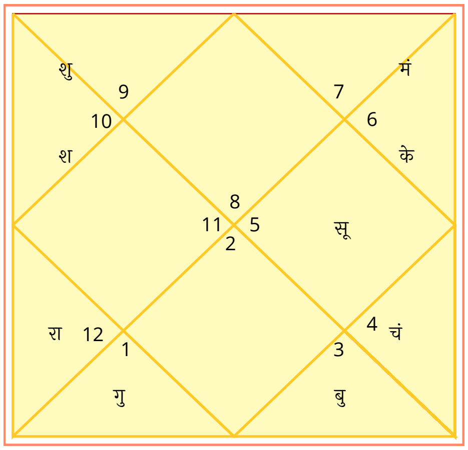

आध्यात्मिकता

सप्तमांश कुंडली

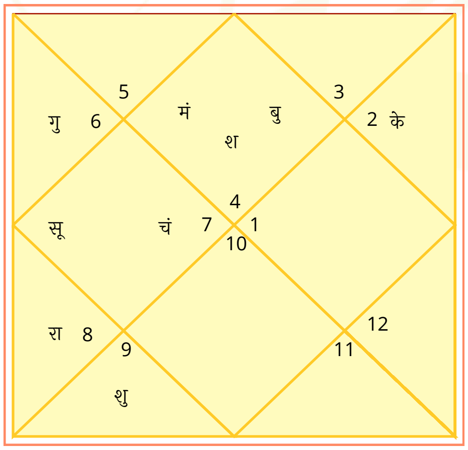

सन्तान

अष्टमांश कुंडली

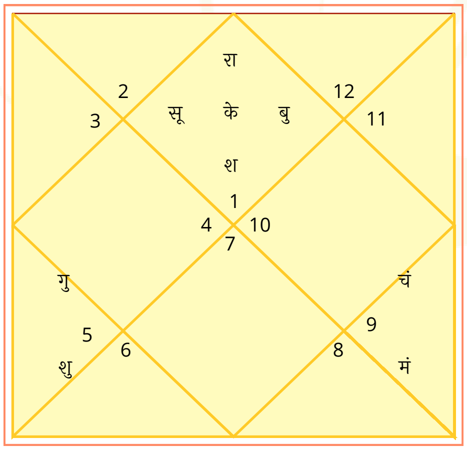

आयु

दशमांश कुंडली

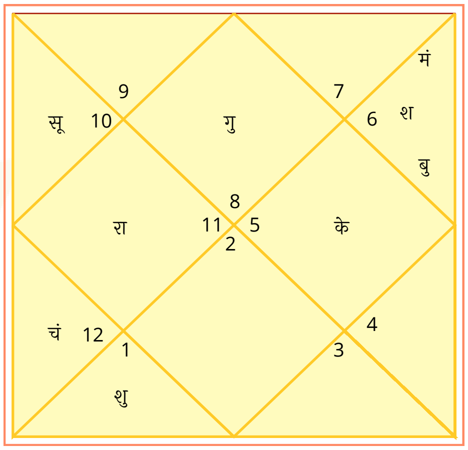

व्यवसाय, जीवनयापन

द्वादशांश कुंडली

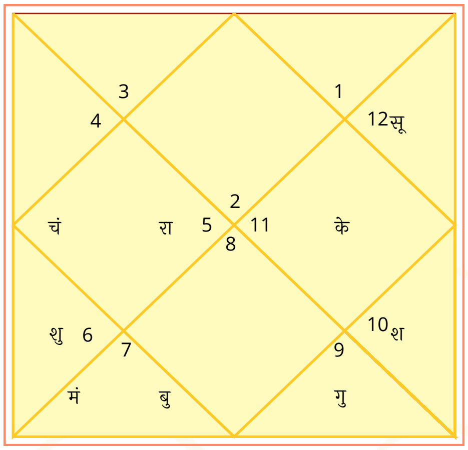

माता-पिता, पैतृक सुख

षोडशांश कुंडली

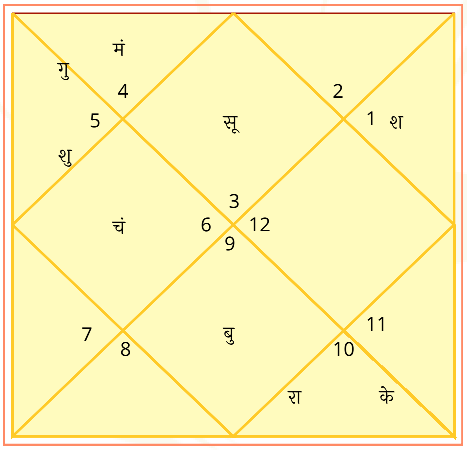

सुख, दुख, वाहन

विशमांश कुंडली

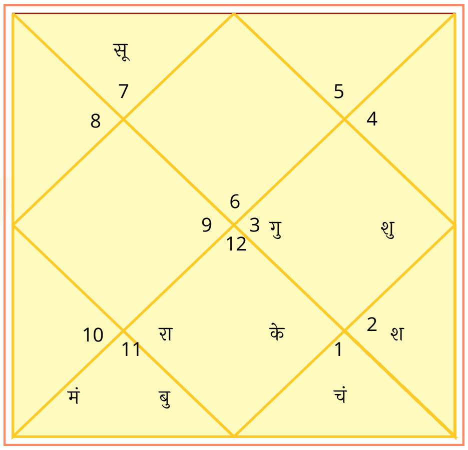

आध्यात्मिक प्रगति एवं पूजा पाठ

चतुर्विंशांश कुंडली

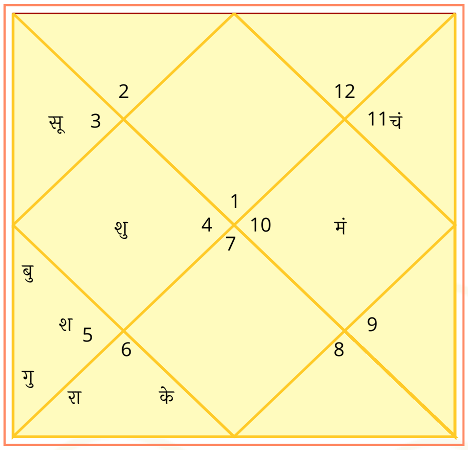

शैक्षणिक उपलब्धि, शिक्षा

भांष कुंडली

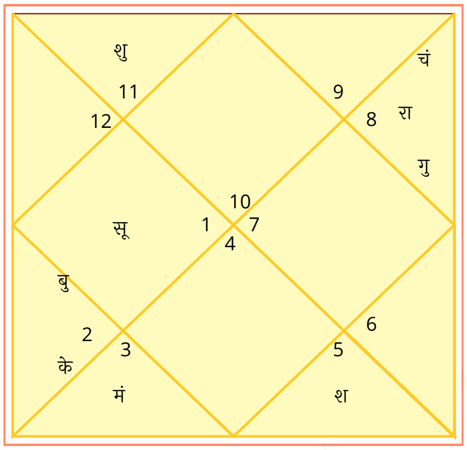

शारीरिक शक्ति, सहनशक्ति

त्रिषमांष कुंडली

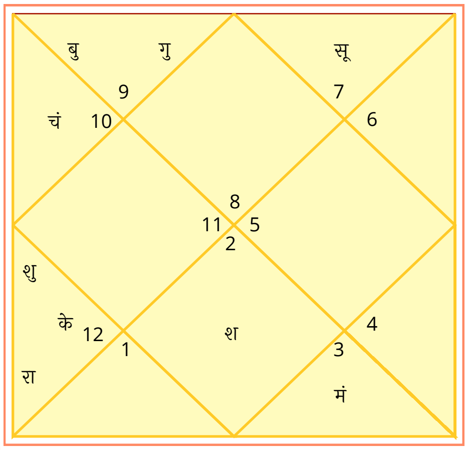

बुराई, विपत्तियां

खवेदांश कुंडली

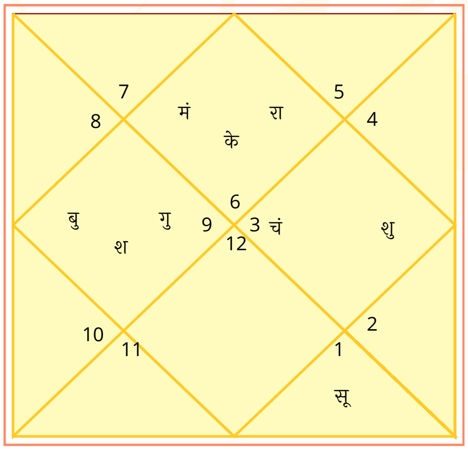

शुभ और अशुभ प्रभाव

अक्षवेदांश कुंडली

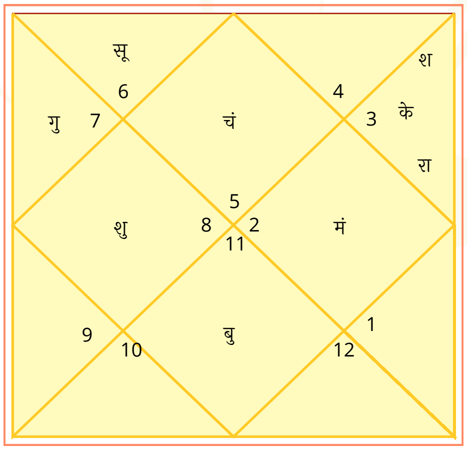

जातक का चरित्र और आचरण

षष्टयांश कुंडली

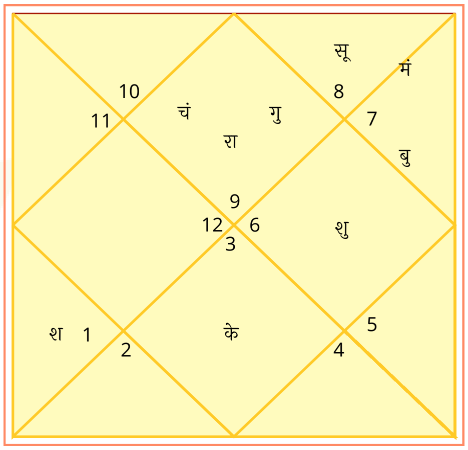

सामान्य खुशियाँ

famouspandit.com

पंचधा मैत्री चक्र

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	--	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	--	सम	मित्र	सम	सम	सम
मंगल	मित्र	मित्र	--	शत्रु	मित्र	सम	सम
बुध	मित्र	शत्रु	सम	--	सम	मित्र	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	--	शत्रु	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	--	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	--

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	--	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
चंद्र	शत्रु	--	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
मंगल	मित्र	मित्र	--	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
बुध	शत्रु	शत्रु	मित्र	--	मित्र	मित्र	मित्र
गुरु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	--	मित्र	शत्रु
शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	--	मित्र
शनि	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	--

famouspandit.com

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	--	सम	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	सम
चंद्र	सम	--	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	--	सम	सम	मित्र	मित्र
बुध	सम	अतिशत्रु	मित्र	--	मित्र	अतिमित्र	मित्र
गुरु	अतिमित्र	सम	सम	सम	--	सम	शत्रु
शुक्र	सम	अतिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	मित्र	--	अतिमित्र
शनि	सम	सम	सम	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	--

कृष्णमूर्ति पद्धति ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्री	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	भाव
सूर्य	--	मेष	27:34:30	मंगल	10
चन्द्र	--	वृश्चिक	234:38:32	मंगल	5
मंगल	--	कुम्भ	322:13:24	शनि	8
बुध	हाँ	मेष	15:02:50	मंगल	10
गुरु	--	मिथुन	75:12:56	बुध	12
शुक्र	--	मीन	345:26:30	गुरु	9
शनि	हाँ	मकर	271:34:11	शनि	7
राहु	हाँ	मकर	287:47:00	शनि	7
केतु	हाँ	कर्क	107:47:00	चन्द्र	1
लग्न	--	कर्क	116:44:32	चन्द्र	1

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	चरण	सब	सब-सब
सूर्य	कृतिका	सूर्य	1	चन्द्र	राहु
चन्द्र	ज्येष्ठा	बुध	3	राहु	गुरु
मंगल	पूर्व भाद्रपद	गुरु	1	शनि	बुध
बुध	भरणी	शुक्र	1	शुक्र	शनि
गुरु	आर्द्रा	राहु	3	केतु	बुध
शुक्र	उत्तर भाद्रपद	शनि	4	गुरु	बुध
शनि	उत्तर षाढ़ा	सूर्य	2	गुरु	शनि
राहु	श्रावण	चन्द्र	3	बुध	बुध
केतु	अश्लेषा	बुध	1	बुध	राहु
लग्न	अश्लेषा	बुध	4	गुरु	बुध

कृष्णमूर्ति पद्धति भाव संधि और कुंडली

भाव	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	सब	सब-सब
1	सिंह	140:27:52	सूर्य	पूर्व फाल्गुनी	शुक्र	गुरु	शनि
2	कन्या	167:48:20	बुध	हस्त	चन्द्र	बुध	बुध
3	तुला	198:15:35	शुक्र	स्वाति	राहु	चन्द्र	मंगल
4	वृश्चिक	230:06:57	मंगल	ज्येष्ठा	बुध	शुक्र	मंगल
5	धनु	261:16:39	गुरु	पूर्व षाढ़ा	शुक्र	गुरु	शुक्र
6	मकर	291:14:32	शनि	श्रावण	चन्द्र	शुक्र	राहु
7	कुम्भ	320:27:52	शनि	पूर्व भाद्रपद	गुरु	गुरु	शनि
8	मीन	347:48:20	गुरु	रेवती	बुध	बुध	राहु
9	मेष	18:15:35	मंगल	भरणी	शुक्र	राहु	राहु
10	वृष	50:06:57	शुक्र	रोहिणी	चन्द्र	केतु	गुरु
11	मिथुन	81:16:39	बुध	पुनर्वसु	गुरु	गुरु	चन्द्र
12	कर्क	111:14:32	चन्द्र	अश्लेषा	बुध	शुक्र	बुध

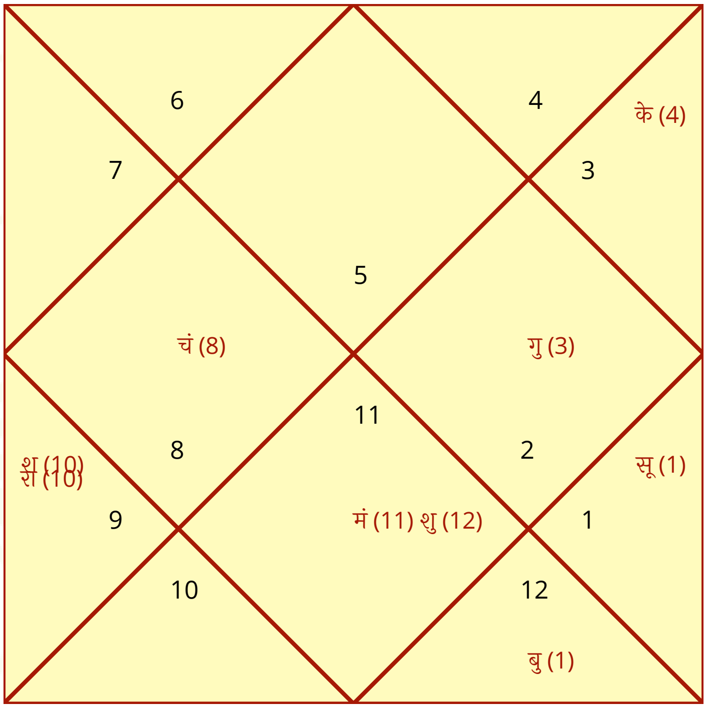

सूर्य भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	1	0	0	1	0	1	1	5
वृषभ	1	0	1	0	0	0	0	1	3
मिथुन	0	0	0	1	0	0	0	1	2
कर्क	1	0	0	0	0	0	1	0	2
सिंह	0	1	1	1	0	1	1	0	5
कन्या	0	1	1	1	0	1	1	1	6
तुला	1	0	1	0	1	0	1	1	5
वृश्चिक	1	0	1	0	1	0	1	0	4
धनु	1	0	1	1	0	0	0	1	4
मकर	1	1	0	1	0	0	1	0	4
कुंभ	1	0	1	1	1	1	1	0	6
मीन	0	0	1	1	0	0	0	0	2

अभिप्राय

पिता

व्यक्तिगत प्रभाव

राजकीय कृपा

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

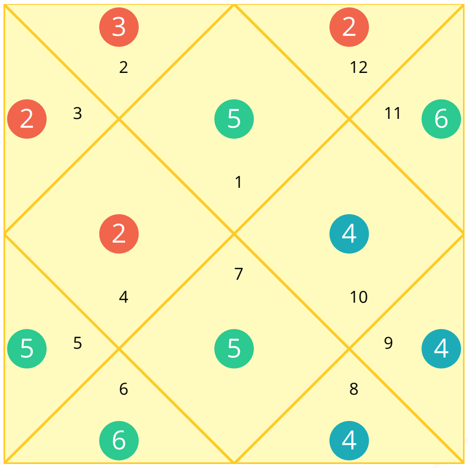

famouspandit.com

चंद्र भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	1	1	1	1	0	0	1	5
वृषभ	0	1	0	0	1	1	1	1	5
मिथुन	1	0	1	1	1	1	1	0	6
कर्क	0	0	1	1	0	1	0	0	3
सिंह	0	1	0	1	0	0	0	0	2
कन्या	1	1	0	0	1	1	0	1	5
तुला	1	0	1	1	0	0	0	0	3
वृश्चिक	1	1	1	1	0	1	1	0	6
धनु	0	0	1	0	1	1	0	1	4
मकर	1	1	0	1	1	1	0	0	5
कुंभ	1	0	0	1	0	0	0	0	2
मीन	0	0	1	0	1	0	1	0	3

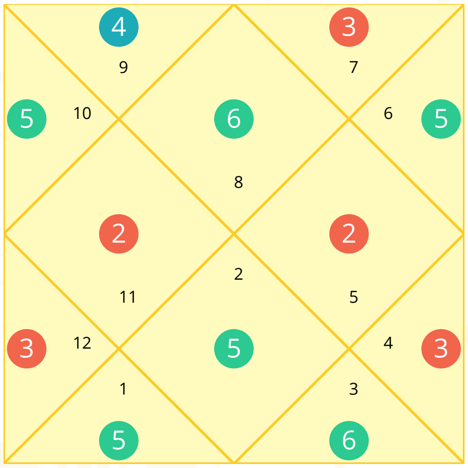

अभिप्राय

माता मन भावना बुद्धि

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

famouspandit.com

मंगल भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	1	0	0	1	0	1	1	4
वृषभ	0	0	1	0	1	0	0	1	3
मिथुन	1	0	0	1	0	0	0	0	2
कर्क	0	0	0	0	0	0	1	1	2
सिंह	1	0	1	1	0	1	1	0	5
कन्या	1	1	1	1	0	0	1	1	6
तुला	0	0	0	0	0	1	1	0	2
वृश्चिक	0	0	1	0	1	0	1	0	3
धनु	0	0	1	0	0	0	0	1	2
मकर	1	1	0	0	0	1	1	0	4
कुंभ	1	0	1	1	0	1	0	0	4
मीन	0	0	1	0	1	0	0	0	2

अभिप्राय

भाई-बहन भूमि-संपत्ति दुध?टना विवाद

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

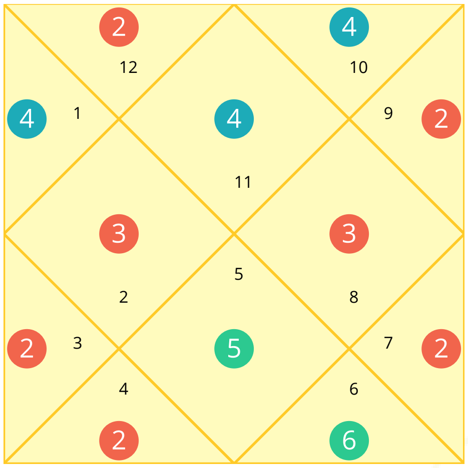

famouspandit.com

बुध भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	1	0	1	1	1	1	1	6
वृषभ	0	0	1	0	1	1	0	1	4
मिथुन	0	1	0	1	0	1	0	0	3
कर्क	0	0	0	0	0	1	1	1	3
सिंह	1	1	1	1	0	0	1	1	6
कन्या	1	1	1	1	0	0	1	0	5
तुला	0	0	1	0	0	1	1	1	4
वृश्चिक	0	0	1	0	1	1	1	0	4
धनु	1	1	1	1	0	0	0	1	5
मकर	0	0	0	1	1	1	1	0	4
कुंभ	1	1	1	1	0	0	1	1	6
मीन	1	0	1	1	0	1	0	0	4

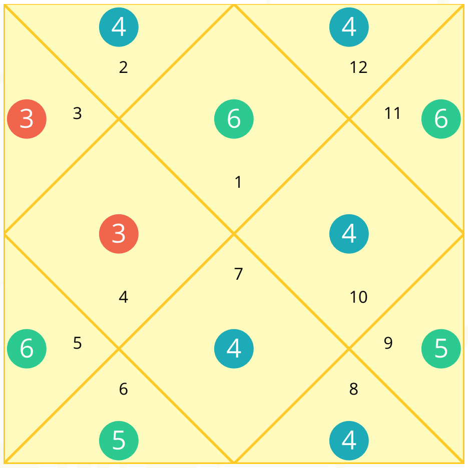

अभिप्राय

रिश्तेदार वक्तृता विवेकबुद्धि शिक्षा

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

famouspandit.com

गुरु भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	0	0	1	1	1	0	1	5
वृषभ	1	1	1	1	0	0	1	1	6
मिथुन	1	0	0	0	1	0	1	0	3
कर्क	1	1	0	1	1	1	0	1	6
सिंह	0	0	1	1	1	1	0	1	5
कन्या	0	1	1	1	1	0	0	0	4
तुला	1	0	0	0	0	0	0	1	2
वृश्चिक	1	0	1	0	0	1	0	1	4
धनु	1	1	1	1	1	1	1	1	8
मकर	1	0	0	1	1	1	0	1	5
कुंभ	1	0	1	1	0	0	0	0	3
मीन	0	1	1	0	1	0	1	1	5

अभिप्राय

संतान · सम्मान · धार्मिक कर्म · सीखना · भाग्य

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

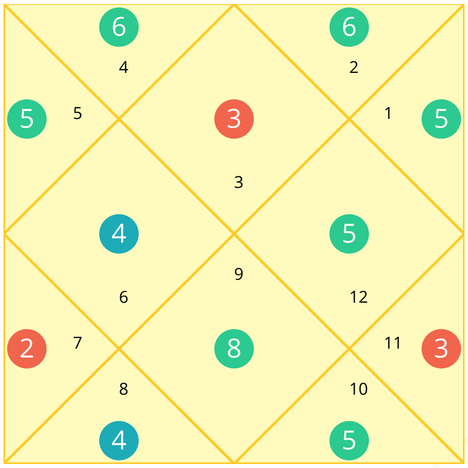

शुक्र भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	0	1	0	1	1	1	0	4
वृषभ	0	0	0	0	0	1	1	1	3
मिथुन	0	1	1	1	0	1	0	0	4
कर्क	0	1	1	0	0	1	0	1	4
सिंह	0	0	0	1	0	0	1	1	3
कन्या	0	1	0	1	0	0	1	1	4
तुला	0	1	1	0	1	1	1	1	6
वृश्चिक	1	1	0	0	0	1	1	1	5
धनु	0	1	1	1	0	1	0	0	4
मकर	0	1	1	0	1	1	0	0	4
कुंभ	1	1	0	1	1	0	0	1	5
मीन	1	1	0	0	1	1	1	1	6

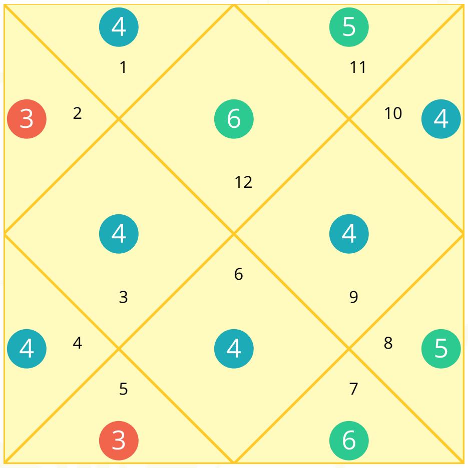

अभिप्राय

पति या पत्नी
विवाह
वाहन
आभूषण

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

शनि भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	1	1	0	1	0	0	1	5
वृषभ	1	0	0	0	1	0	1	1	4
मिथुन	0	0	1	0	0	0	1	0	2
कर्क	1	0	1	0	0	0	0	1	3
सिंह	0	0	0	0	0	1	0	0	1
कन्या	0	1	0	1	0	0	0	1	3
तुला	1	0	0	0	1	0	0	1	3
वृश्चिक	1	0	1	1	1	0	1	0	5
धनु	0	0	1	1	0	0	0	1	3
मकर	1	1	1	1	0	1	0	0	5
कुंभ	1	0	0	1	0	1	0	0	3
मीन	0	0	0	1	0	0	1	0	2

अभिप्राय

कर्मचारी

जीविका

कष्ट व शोक

सूचक

शुभ

अशुभ

मिश्रित

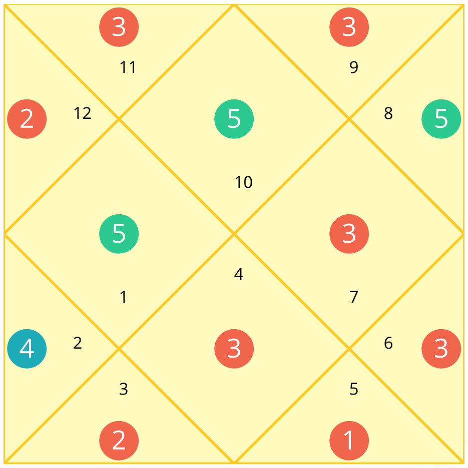

famouspandit.com

लग्न भिन्नाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	1	1	1	1	1	1	1	7
वृषभ	0	0	0	1	0	1	0	1	3
मिथुन	1	0	0	0	1	1	1	0	4
कर्क	1	0	1	1	1	1	0	0	5
सिंह	0	1	0	0	0	0	0	0	1
कन्या	1	1	0	1	1	0	0	1	5
तुला	0	1	0	0	1	1	1	0	4
वृश्चिक	0	0	1	1	1	1	1	0	5
धनु	0	0	1	0	1	0	0	1	3
मकर	1	1	0	1	0	0	1	0	4
कुंभ	1	0	1	1	1	0	0	0	4
मीन	1	0	0	0	1	1	1	0	4

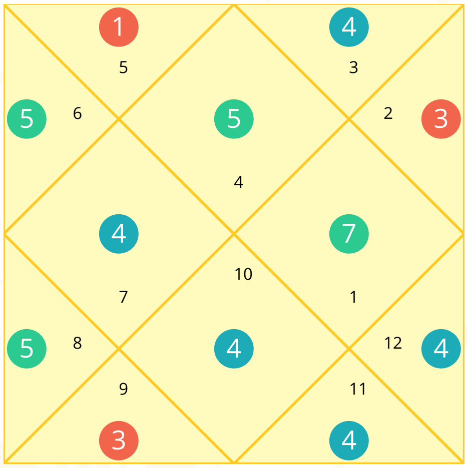

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

famouspandit.com

सर्वाष्टक वर्ग

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	5	5	4	6	5	4	5	0	34
वृषभ	3	5	3	4	6	3	4	0	28
मिथुन	2	6	2	3	3	4	2	0	22
कर्क	2	3	2	3	6	4	3	0	23
सिंह	5	2	5	6	5	3	1	0	27
कन्या	6	5	6	5	4	4	3	0	33
तुला	5	3	2	4	2	6	3	0	25
वृश्चिक	4	6	3	4	4	5	5	0	31
धनु	4	4	2	5	8	4	3	0	30
मकर	4	5	4	4	5	4	5	0	31
कुंभ	6	2	4	6	3	5	3	0	29
मीन	2	3	2	4	5	6	2	0	24

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

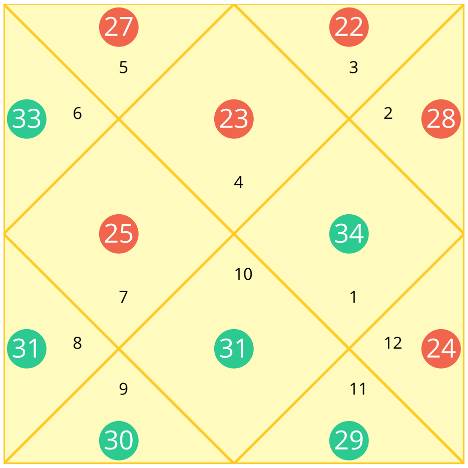

विम्शोत्तरी दशा - I

बुध

11-03-1980 07:45
11-03-1997 13:45

बुध	07-08-1982 23:12
केतु	05-08-1983 04:09
शुक्र	05-06-1986 01:09
सूर्य	11-04-1987 12:15
चन्द्र	09-09-1988 22:45
मंगल	07-09-1989 03:42
राहु	26-03-1992 13:00
गुरु	02-07-1994 10:36
शनि	11-03-1997 13:45

केतु

11-03-1997 13:45
11-03-2004 07:45

केतु	07-08-1997 17:12
शुक्र	07-10-1998 20:12
सूर्य	12-02-1999 16:18
चन्द्र	13-09-1999 17:48
मंगल	09-02-2000 21:15
राहु	27-02-2001 09:33
गुरु	03-02-2002 07:09
शनि	15-03-2003 02:48
बुध	11-03-2004 07:45

शुक्र

11-03-2004 07:45
11-03-2024 07:45

शुक्र	11-07-2007 19:45
सूर्य	11-07-2008 01:45
चन्द्र	11-03-2010 19:45
मंगल	11-05-2011 22:45
राहु	11-05-2014 16:45
गुरु	09-01-2017 16:45
शनि	11-03-2020 07:45
बुध	10-01-2023 04:45
केतु	11-03-2024 07:45

सूर्य

11-03-2024 07:45
11-03-2030 19:45

सूर्य	28-06-2024 21:33
चन्द्र	28-12-2024 12:33
मंगल	05-05-2025 08:39
राहु	30-03-2026 02:03
गुरु	16-01-2027 06:51
शनि	29-12-2027 06:33
बुध	03-11-2028 17:39
केतु	11-03-2029 13:45
शुक्र	11-03-2030 19:45

चन्द्र

11-03-2030 19:45
11-03-2040 07:45

चन्द्र	10-01-2031 04:45
मंगल	11-08-2031 06:15
राहु	09-02-2033 03:15
गुरु	11-06-2034 03:15
शनि	10-01-2036 10:45
बुध	10-06-2037 21:15
केतु	09-01-2038 22:45
शुक्र	10-09-2039 16:45
सूर्य	11-03-2040 07:45

मंगल

11-03-2040 07:45
12-03-2047 01:45

मंगल	07-08-2040 11:12
राहु	25-08-2041 23:30
गुरु	01-08-2042 21:06
शनि	10-09-2043 16:45
बुध	06-09-2044 21:42
केतु	03-02-2045 01:09
शुक्र	05-04-2046 04:09
सूर्य	11-08-2046 00:15
चन्द्र	12-03-2047 01:45

विम्शोत्तरी दशा - II

राहु	
12-03-2047 01:45	
11-03-2065 13:45	
राहु	22-11-2049 05:57
गुरु	16-04-2052 20:21
शनि	21-02-2055 19:27
बुध	10-09-2057 04:45
केतु	28-09-2058 17:03
शुक्र	28-09-2061 11:03
सूर्य	23-08-2062 04:27
चन्द्र	22-02-2064 01:27
मंगल	11-03-2065 13:45

गुरु	
11-03-2065 13:45	
11-03-2081 13:45	
गुरु	29-04-2067 18:33
शनि	10-11-2069 01:45
बुध	15-02-2072 23:21
केतु	21-01-2073 20:57
शुक्र	22-09-2075 20:57
सूर्य	11-07-2076 01:45
चन्द्र	10-11-2077 01:45
मंगल	16-10-2078 23:21
राहु	11-03-2081 13:45

शनि	
11-03-2081 13:45	
12-03-2100 07:45	
शनि	14-03-2084 08:48
बुध	22-11-2086 11:57
केतु	01-01-2088 07:36
शुक्र	02-03-2091 22:36
सूर्य	12-02-2092 22:18
चन्द्र	13-09-2093 05:48
मंगल	23-10-2094 01:27
राहु	29-08-2097 00:33
गुरु	12-03-2100 07:45

वर्त्तमान दशा

दशा नाम	ग्रह	आरम्भ तिथि	सम्पति तिथि
महादशा	शुक्र	11-03-2004 07:45	11-03-2024 07:45
अंतर्दशा	शनि	09-01-2017 16:45	11-03-2020 07:45
प्रत्यंतर दशा	चन्द्र	05-11-2018 18:11	10-02-2019 03:26
सूक्ष्म दशा	सूर्य	05-02-2019 07:46	10-02-2019 03:26

*** ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।**

famouspandit.com

भद्रिका (5 वर्ष)

15-5-1987 20:8
15-5-1992 20:8

भद्रिका	24-1-1988 11:38
उल्का	23-11-1988 20:38
सिद्धि	13-11-1989 23:8
संकटा	24-12-1990 19:8
मंगला	13-2-1991 12:38
पिंगला	25-5-1991 23:38
धान्य	25-10-1991 4:8
भ्रामरी	15-5-1992 20:8

उल्का (6 वर्ष)

15-5-1992 20:8
15-5-1998 20:8

उल्का	16-5-1993 2:8
सिद्धि	16-7-1994 5:8
संकटा	15-11-1995 5:8
मंगला	15-1-1996 2:8
पिंगला	15-5-1996 20:8
धान्य	14-11-1996 11:8
भ्रामरी	15-7-1997 23:8
भद्रिका	15-5-1998 20:8

सिद्धि (7 वर्ष)

15-5-1998 20:8
15-5-2005 20:8

सिद्धि	24-9-1999 23:38
संकटा	15-4-2001 3:38
मंगला	25-6-2001 4:8
पिंगला	14-11-2001 5:8
धान्य	15-6-2002 6:38
भ्रामरी	26-3-2003 8:38
भद्रिका	15-3-2004 11:8
उल्का	15-5-2005 20:8

संकटा (8 वर्ष)

15-5-2005 20:8
15-5-2013 20:8

संकटा	24-2-2007 4:8
मंगला	16-5-2007 8:8
पिंगला	25-10-2007 16:8
धान्य	25-6-2008 4:8
भ्रामरी	15-5-2009 20:8
भद्रिका	25-6-2010 16:8
उल्का	25-10-2011 16:8
सिद्धि	15-5-2013 20:8

मंगला (1 वर्ष)

15-5-2013 20:8
15-5-2014 20:8

मंगला	25-5-2013 23:38
पिंगला	15-6-2013 6:38
धान्य	15-7-2013 17:8
भ्रामरी	25-8-2013 7:8
भद्रिका	15-10-2013 0:38
उल्का	14-12-2013 21:38
सिद्धि	23-2-2014 22:8
संकटा	15-5-2014 20:8

पिंगला (2 वर्ष)

15-5-2014 20:8
15-5-2016 20:8

पिंगला	25-6-2014 10:8
धान्य	25-8-2014 7:8
भ्रामरी	14-11-2014 11:8
भद्रिका	23-2-2015 22:8
उल्का	25-6-2015 16:8
सिद्धि	14-11-2015 17:8
संकटा	25-4-2016 1:8
मंगला	15-5-2016 20:8

योगिनी दशा - II

धान्य (3 वर्ष)

15-5-2016 20:8
15-5-2019 20:8

धान्य	15-8-2016 3:38
भ्रामरी	14-12-2016 21:38
भद्रिका	16-5-2017 2:8
उल्का	14-11-2017 17:8
सिद्धि	15-6-2018 18:38
संकटा	14-2-2019 6:38
मंगला	16-3-2019 17:8
पिंगला	15-5-2019 20:8

भ्रामरी (4 वर्ष)

15-5-2019 20:8
15-5-2023 20:8

भ्रामरी	25-10-2019 4:8
भद्रिका	15-5-2020 2:8
उल्का	13-1-2021 14:8
सिद्धि	24-10-2021 16:8
संकटा	14-9-2022 8:8
मंगला	24-10-2022 22:8
पिंगला	14-1-2023 2:8
धान्य	15-5-2023 20:8

भद्रिका (5 वर्ष)

15-5-2023 20:8
15-5-2028 20:8

भद्रिका	24-1-2024 11:38
उल्का	23-11-2024 20:38
सिद्धि	13-11-2025 23:8
संकटा	24-12-2026 19:8
मंगला	13-2-2027 12:38
पिंगला	25-5-2027 23:38
धान्य	25-10-2027 4:8
भ्रामरी	15-5-2028 20:8

उल्का (6 वर्ष)

15-5-2028 20:8
15-5-2034 20:8

उल्का	16-5-2029 2:8
सिद्धि	16-7-2030 5:8
संकटा	15-11-2031 5:8
मंगला	15-1-2032 2:8
पिंगला	15-5-2032 20:8
धान्य	14-11-2032 11:8
भ्रामरी	15-7-2033 23:8
भद्रिका	15-5-2034 20:8

सिद्धि (7 वर्ष)

15-5-2034 20:8
15-5-2041 20:8

सिद्धि	24-9-2035 23:38
संकटा	15-4-2037 3:38
मंगला	25-6-2037 4:8
पिंगला	14-11-2037 5:8
धान्य	15-6-2038 6:38
भ्रामरी	26-3-2039 8:38
भद्रिका	15-3-2040 11:8
उल्का	15-5-2041 20:8

संकटा (8 वर्ष)

15-5-2041 20:8
15-5-2049 20:8

संकटा	24-2-2043 4:8
मंगला	16-5-2043 8:8
पिंगला	25-10-2043 16:8
धान्य	25-6-2044 4:8
भ्रामरी	15-5-2045 20:8
भद्रिका	25-6-2046 16:8
उल्का	25-10-2047 16:8
सिद्धि	15-5-2049 20:8

योगिनी दशा - III

मंगला (1 वर्ष)

15-5-2049 20:8
15-5-2050 20:8

मंगला	25-5-2049 23:38
पिंगला	15-6-2049 6:38
धान्य	15-7-2049 17:8
भ्रामरी	25-8-2049 7:8
भद्रिका	15-10-2049 0:38
उल्का	14-12-2049 21:38
सिद्धि	23-2-2050 22:8
संकटा	15-5-2050 20:8

पिंगला (2 वर्ष)

15-5-2050 20:8
15-5-2052 20:8

पिंगला	25-6-2050 10:8
धान्य	25-8-2050 7:8
भ्रामरी	14-11-2050 11:8
भद्रिका	23-2-2051 22:8
उल्का	25-6-2051 16:8
सिद्धि	14-11-2051 17:8
संकटा	25-4-2052 1:8
मंगला	15-5-2052 20:8

धान्य (3 वर्ष)

15-5-2052 20:8
15-5-2055 20:8

धान्य	15-8-2052 3:38
भ्रामरी	14-12-2052 21:38
भद्रिका	16-5-2053 2:8
उल्का	14-11-2053 17:8
सिद्धि	15-6-2054 18:38
संकटा	14-2-2055 6:38
मंगला	16-3-2055 17:8
पिंगला	15-5-2055 20:8

भ्रामरी (4 वर्ष)

15-5-2055 20:8
15-5-2059 20:8

भ्रामरी	25-10-2055 4:8
भद्रिका	15-5-2056 2:8
उल्का	13-1-2057 14:8
सिद्धि	24-10-2057 16:8
संकटा	14-9-2058 8:8
मंगला	24-10-2058 22:8
पिंगला	14-1-2059 2:8
धान्य	15-5-2059 20:8

*** ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।**

चर दशा

कर्क (8 वर्ष)

12-5-1990
12-5-1998

वृष	12-3-2019
मिथुन	12-1-2020
कर्क	12-11-2020
सिंह	12-9-2021
कन्या	12-7-2022
तुला	12-5-2023
वृश्चिक	12-3-2024
धनु	12-1-2025
मकर	12-11-2025
कुम्भ	12-9-2026
मीन	12-7-2027
मेष	12-5-2028

मिथुन (10 वर्ष)

12-5-1998
12-5-2008

वृष	12-3-1991
मिथुन	12-1-1992
कर्क	12-11-1992
सिंह	12-9-1993
कन्या	12-7-1994
तुला	12-5-1995
वृश्चिक	12-3-1996
धनु	12-1-1997
मकर	12-11-1997
कुम्भ	12-9-1998
मीन	12-7-1999
मेष	12-5-2000

वृष (10 वर्ष)

12-5-2008
12-5-2018

वृष	12-3-1991
मिथुन	12-1-1992
कर्क	12-11-1992
सिंह	12-9-1993
कन्या	12-7-1994
तुला	12-5-1995
वृश्चिक	12-3-1996
धनु	12-1-1997
मकर	12-11-1997
कुम्भ	12-9-1998
मीन	12-7-1999
मेष	12-5-2000

मेष (10 वर्ष)

12-5-2018
12-5-2028

वृष	12-3-1991
मिथुन	12-1-1992
कर्क	12-11-1992
सिंह	12-9-1993
कन्या	12-7-1994
तुला	12-5-1995
वृश्चिक	12-3-1996

मीन (9 वर्ष)

12-5-2028
12-5-2037

वृष	12-3-1991
मिथुन	12-1-1992
कर्क	12-11-1992
सिंह	12-9-1993
कन्या	12-7-1994
तुला	12-5-1995
वृश्चिक	12-3-1996

कुम्भ (1 वर्ष)

12-5-2037
12-5-2038

वृष	12-3-1991
मिथुन	12-1-1992
कर्क	12-11-1992
सिंह	12-9-1993
कन्या	12-7-1994
तुला	12-5-1995
वृश्चिक	12-3-1996

धनु	12-1-1997		धनु	12-1-1997		धनु	12-1-1997
मकर	12-11-1997		मकर	12-11-1997		मकर	12-11-1997
कुम्भ	12-9-1998		कुम्भ	12-9-1998		कुम्भ	12-9-1998
मीन	12-7-1999		मीन	12-7-1999		मीन	12-7-1999
मेष	12-5-2000		मेष	12-5-2000		मेष	12-5-2000

मकर (12 वर्ष)

12-5-2038
12-5-2050

वृष	12-3-1991
मिथुन	12-1-1992
कर्क	12-11-1992
सिंह	12-9-1993
कन्या	12-7-1994
तुला	12-5-1995
वृश्चिक	12-3-1996
धनु	12-1-1997
मकर	12-11-1997
कुम्भ	12-9-1998
मीन	12-7-1999
मेष	12-5-2000

धनु (6 वर्ष)

12-5-2050
12-5-2056

वृष	12-3-1991
मिथुन	12-1-1992
कर्क	12-11-1992
सिंह	12-9-1993
कन्या	12-7-1994
तुला	12-5-1995
वृश्चिक	12-3-1996
धनु	12-1-1997
मकर	12-11-1997
कुम्भ	12-9-1998
मीन	12-7-1999
मेष	12-5-2000

वृश्चिक (3 वर्ष)

12-5-2056
12-5-2059

वृष	12-3-1991
मिथुन	12-1-1992
कर्क	12-11-1992
सिंह	12-9-1993
कन्या	12-7-1994
तुला	12-5-1995
वृश्चिक	12-3-1996
धनु	12-1-1997
मकर	12-11-1997
कुम्भ	12-9-1998
मीन	12-7-1999
मेष	12-5-2000

तुला (5 वर्ष)

12-5-2059
12-5-2064

वृष	12-3-1991
मिथुन	12-1-1992
कर्क	12-11-1992
सिंह	12-9-1993

कन्या (5 वर्ष)

12-5-2064
12-5-2069

वृष	12-3-1991
मिथुन	12-1-1992
कर्क	12-11-1992
सिंह	12-9-1993

सिंह (4 वर्ष)

12-5-2069
12-5-2073

वृष	12-3-1991
मिथुन	12-1-1992
कर्क	12-11-1992
सिंह	12-9-1993

कन्या	12-7-1994
तुला	12-5-1995
वृश्चिक	12-3-1996
धनु	12-1-1997
मकर	12-11-1997
कुम्भ	12-9-1998
मीन	12-7-1999
मेष	12-5-2000

कन्या	12-7-1994
तुला	12-5-1995
वृश्चिक	12-3-1996
धनु	12-1-1997
मकर	12-11-1997
कुम्भ	12-9-1998
मीन	12-7-1999
मेष	12-5-2000

कन्या	12-7-1994
तुला	12-5-1995
वृश्चिक	12-3-1996
धनु	12-1-1997
मकर	12-11-1997
कुम्भ	12-9-1998
मीन	12-7-1999
मेष	12-5-2000

*** ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।**

कालसर्प दोष

जब किसी व्यक्ति की कुंडली में राहु और केतू ग्रहों के बीच अन्य सभी ग्रह आ जाते हैं तो कालसर्प दोष का निर्माण होता है। क्योकि कुंडली के एक भाव में राहु और दूसरे भाव में केतु के बैठे होने से अन्य सभी ग्रहों से आ रहे फल रुक जाते हैं। इन दोनों ग्रहों के बीच में सभी ग्रह फँस जाते हैं और यह जातक के लिए एक समस्या बन जाती है। इस दोष के कारण फिर काम में बाधा, नौकरी में रुकावट, शादी में देरी और धन संबंधित परेशानियाँ, उत्पन्न होने लगती हैं।

कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नहीं पड़ता। किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां बैठे हैं और उनका बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर भरपूर असर पड़ता है। इसलिए मात्र कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता कही जायेगी। कालसर्प दोष कुंडली में ख़राब अवश्य माना जाता है किन्तु विधिवत तरह से यदि इसका उपाय किया जाए तो यही कालसर्प दोष सिद्ध योग भी बन सकता है।

अनन्त	कुलिक	वासुकी	शंखपाल
पद्म	महापद्म	तक्षक	कर्कोटक
शंखचूड़	घातक	विषधर	शेषनाग

आपके जन्मपत्रिका में कालसर्पदोष

कालसर्प की उपस्थिति

आपकी जन्मपत्रिका में अनुदित रूप में कालसर्प दोष विद्यमान है।

आपको कुंडली में कालसर्प दोष आंशिक रूप से विद्यमान है।

कालसर्प नाम

तक्षक

दिशा

आंशिक अनुदित

कालसर्प दोष फल

आपकी जन्मपत्रिका में तक्षक नामक कालसर्प योग बन रहा है।
केतु लग्न में और राहु सप्तम स्थान में हो तो तक्षक नामक कालसर्प योग बनता है। कालसर्प योग की शास्त्रीय परिभाषा में इस प्रकार का अनुदित योग परिगणित नहीं है। लेकिन व्यवहार में इस प्रकार के योग का भी संबंधित जातकों पर अशुभ प्रभाव पड़ता देखा जाता है। तक्षक नामक कालसर्प योग से पीड़ित जातकों को पैतृक संपत्ति का सुख नहीं मिल पाता। या तो उसे पैतृक संपत्ति मिलती ही नहीं और मिलती है तो वह उसे किसी अन्य को दान दे देता है अथवा बर्बाद कर देता है। ऐसे जातक प्रेम प्रसंग में भी असफल होते देखे जाते हैं। गुप्त प्रसंगों में भी उन्हें धोखा खाना पड़ता है। वैवाहिक जीवन सामान्य रहते हुए भी कभी-कभी संबंध इतना तनावपूर्ण हो जाता है कि अलगाव की नौबत आ जाती है। जातक को अपने घर के अन्य सदस्यों की भी यथेष्ट सहानुभूति नहीं मिल पाती। साझेदारी में उसे नुकसान होता है तथा समय-समय पर उसे शत्रु षड़यंत्रों का शिकार बनना पड़ता है।

कालसर्प दोष के उपाय

- कालसर्प दोष के निम्नलिखित उपाय हैं -

- कालसर्प दोष निवारण यंत्रा घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।

- हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

- गृह में मयूर (मोर) पंख रखें ।

- शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।

- विद्यार्थीजन सरस्वती जी के बीज मंत्रों का एक वर्ष तक जाप करें और विधिवत उपासना करें।

- राहु की दशा आने पर प्रतिदिन एक माला राहु मंत्रा का जाप करें और जब जाप की संख्या 18 हजार हो जाये तो राहु की मुख्य समिधा दुर्वा से पूर्णाहुति हवन कराएं और किसी गरीब को उड़द व नीले वस्त्रा का दान करें

- महामृत्युंजय मंत्रों का जाप प्रतिदिन 11 माला रोज करें, जब तक राहु केतु की दशा-अंर्तदशा रहे और हर शनिवार को श्री शनिदेव का तैलाभिषेक करें और मंगलवार को हनुमान जी को चौला चढ़ायें।

- शुभ मुहूर्त में सर्वतोभद्रमण्डल यंत्रा को पूजित कर धारण करें।

- श्रावणमास में 30 दिनों तक महादेव का अभिषेक करें।

- एक वर्ष तक गणपति अथर्वशीर्ष का नित्य पाठ करें।

- श्रावण के महीने में प्रतिदिन स्नानोपरांत 11 माला 'नम: शिवाय' मंत्रा का जप करने के उपरांत शिवजी को बेलपत्रा व गाय का दूध तथा गंगाजल चढ़ाएं तथा सोमवार का व्रत करें।

मांगलिक दोष क्या होता है

जिस जातक की जन्म कुंडली, लग्न/चंद्र कुंडली आदि में मंगल ग्रह, लग्न से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भावों में से कहीं भी स्थित हो, तो उसे मांगलिक कहते हैं।

कुण्डली में जब लग्न भाव, चतुर्थ भाव, सप्तम भाव, अष्टम भाव और द्वादश भाव में मंगल स्थित होता है तब कुण्डली में मंगल दोष माना जाता है। सप्तम भाव से हम दाम्पत्य जीवन का विचार करते हैं। अष्टम भाव से दाम्पत्य जीवन के मांगलीक सुख को देखा जाता है। मंगल लग्न में स्थित होने से सप्तम भाव और अष्टम भाव दोनों भावों को दृष्टि देता है। चतुर्थ भाव में मंगल के स्थित होने से सप्तम भाव पर मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि पड़ती है। द्वादश भाव में यदि मंगल स्थित है तब अष्टम दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है।

मूल रूप से मंगल की प्रकृति के अनुसार ऐसा ग्रह योग हानिकारक प्रभाव दिखाता है, लेकिन वैदिक पूजा-प्रक्रिया के द्वारा इसकी भीषणता को नियंत्रित कर सकते है। मंगल ग्रह की पूजा के द्वारा मंगल देव को प्रसन्न किया जाता है, तथा मंगल द्वारा जनित विनाशकारी प्रभावों, सर्वारिष्ट को शांत व नियंत्रित कर सकारात्मक प्रभावों में वृद्धि की जा सकती है।

लग्ने व्यये सुखे वापि सप्तमे वा अष्टमे कुजे |
शुभ दृग् योग हीने च पतिं हन्ति न संशयम् ||

मांगलिक विश्लेषण

कुल मांगलिक प्रतिशत	27.75%

मांगलिक फल

कुंडली में मांगलिक दोष है और प्रभावी है, मिलान के समय इसका ध्यान रखे। आप मांगलिक हैं ।

famouspandit.com

भाव के आधार पर

केतु आपके कुंडली में लग्न भाव में है।

शनि सप्तम भाव में आपके कुंडली में स्थित है।

राहु आपके कुंडली में सप्तम भाव में है।

अष्टम भाव में मंगल अवस्थित है।

दृष्टि के आधार पर

सप्तम भाव केतु से दृष्ट है।

केतु , आपके कुंडली के पंचम भाव को देख रहा है।

आपकी कुंडली में लग्न भाव को शनि देख रहा है।

आपकी कुंडली में लग्न भाव को राहु देख रहा है।

मंगल की दृष्टि आपके कुडंली के द्वितीय भाव पर पड़ रही है।

आपके कुंडली का चतुर्थ भाव सूर्य से दृष्ट है।

आपके कुंडली का चतुर्थ भाव शनि से दृष्ट है।

मांगलिक दोष के उपाय

- चांदी की चौकोर डिब्बी में शहद भरकर हनुमान मंदिर या किसी निर्जन वन, स्थान में रखने से मंगल दोष शांत होता है |

- मंगलवार को सुन्दरकाण्ड एवं बालकाण्ड का पाठ करना लाभकारी होता है |

- बंदरों व कुत्तों को गुड व आटे से बनी मीठी रोटी खिलाएं |

- मंगल चन्द्रिका स्तोत्र का पाठ करना भी लाभ देता है |

- माँ मंगला गौरी की आराधना से भी मंगल दोष दूर होता है |

- कार्तिकेय जी की पूजा से भी मंगल दोष के दुशप्रभाव में लाभ मिलता है |

- मंगलवार को बताशे व गुड की रेवड़ियाँ बहते जल में प्रवाहित करें |

- मंगली कन्यायें गौरी पूजन तथा श्रीमद्भागवत के 18 वें अध्याय के नवें श्लोक का जप अवश्य करें |

साढ़ेसाती क्या होता है

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार साढ़े साती तब बनती है जब शनि गोचर में जन्म चन्द्र से प्रथम, द्वितीय और द्वादश भाव से गुजरता है। शनि एक राशि से गुजरने में ढ़ाई वर्ष का समय लेता है इस तरह तीन राशियों से गुजरते हुए यह साढ़े सात वर्ष का समय लेता है जो साढ़े साती कही जाती है। सामान्य अर्थ में साढ़े साती का अर्थ हुआ सात वर्ष छ: मास।

साढ़े साती के समय व्यक्ति को कठिनाईयों एवं परेशानियों का सामना करना होता है परंतु इसमें घबराने वाली बात नहीं हैं। इसमे कठिनाई और मुश्किल हालत जरूर आते हैं परंतु इस दौरान व्यक्ति को कामयाबी भी मिलती है। बहुत से व्यक्ति साढ़े साती के प्रभाव से सफलता की उंचाईयों पर पहुंच जाते हैं। साढ़े साती व्यक्ति को कर्मशील बनाता है और उसे कर्म की ओर ले जाता है। हठी, अभिमानी और कठोर व्यक्तियों से यह काफी मेहनत करवाता है।

क्या आप साढ़ेसाती में है

हाँ , इस समय आप साढ़ेसाती के प्रभाव में हैं।

विचार करने का दिनाकं	9-2-2019
शनि राशि	धनु
चंद्र राशि	वृश्चिक
वक्री शनि ?	नहीं

famouspandit.com

साढ़ेसाती विश्लेषण - II

चंद्र राशि	शनि राशि	वक्री शनि	चरण प्रकार	दिनांक	संक्षिप्त विवरण
वृश्चिक	मकर	हाँ	अस्त प्रारम्भ	20-6-1990	
वृश्चिक	मकर	--	अस्त समाप्त	15-12-1990	
वृश्चिक	तुला	--	उदय प्रारम्भ	15-11-2011	
वृश्चिक	तुला	हाँ	उदय समाप्त	16-5-2012	
वृश्चिक	तुला	--	उदय प्रारम्भ	4-8-2012	
वृश्चिक	वृश्चिक	--	शिखर प्रारम्भ	2-11-2014	
वृश्चिक	धनु	--	अस्त प्रारम्भ	27-1-2017	
वृश्चिक	धनु	हाँ	शिखर प्रारम्भ	21-6-2017	
वृश्चिक	धनु	--	अस्त प्रारम्भ	26-10-2017	
वृश्चिक	मकर	--	अस्त समाप्त	24-1-2020	
वृश्चिक	तुला	--	उदय प्रारम्भ	28-1-2041	
वृश्चिक	तुला	हाँ	उदय समाप्त	6-2-2041	
वृश्चिक	तुला	--	उदय प्रारम्भ	26-9-2041	
वृश्चिक	वृश्चिक	--	शिखर प्रारम्भ	12-12-2043	
वृश्चिक	वृश्चिक	हाँ	उदय प्रारम्भ	23-6-2044	
वृश्चिक	वृश्चिक	--	शिखर प्रारम्भ	30-8-2044	
वृश्चिक	धनु	--	अस्त प्रारम्भ	8-12-2046	
वृश्चिक	मकर	--	अस्त समाप्त	6-3-2049	
वृश्चिक	मकर	हाँ	अस्त प्रारम्भ	9-7-2049	
वृश्चिक	मकर	--	अस्त समाप्त	4-12-2049	
वृश्चिक	तुला	--	उदय प्रारम्भ	4-11-2070	
वृश्चिक	वृश्चिक	--	शिखर प्रारम्भ	5-2-2073	
वृश्चिक	वृश्चिक	हाँ	उदय प्रारम्भ	30-3-2073	
वृश्चिक	वृश्चिक	हाँ	उदय प्रारम्भ	1-4-2073	

चंद्र राशि	शनि राशि	वक्री शनि	चरण प्रकार	दिनांक	संक्षिप्त विवरण
वृश्चिक	वृश्चिक	--	शिखर प्रारम्भ	23-10-2073	
वृश्चिक	धनु	--	अस्त प्रारम्भ	16-1-2076	
वृश्चिक	धनु	हाँ	शिखर प्रारम्भ	10-7-2076	
वृश्चिक	धनु	--	अस्त प्रारम्भ	12-10-2076	
वृश्चिक	मकर	--	अस्त समाप्त	14-1-2079	
वृश्चिक	मकर	--	अस्त समाप्त	15-1-2079	

साढ़े सती उपाय

- साढ़ेसाती के अनिष्ट प्रभावों को काम करने के उपाय निम्नलिखित है -

- साढ़े साती की परेशानी से बचने के लिए नियमित हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए।

- इस ग्रह दशा से बचने के लिए काले घोड़े की नाल की अंगूठी बनाकर उसे दाएं हाथ की मध्यमा उंगली में पहनना चाहिए।

- शनि देव को शनिवार के दिन सरसों का तेल और तांबा भेट करना चाहिए।

- किसी गरीब व्यक्ति को काले कंबल का दान करें।

- शिवलिंग पर काले तिल अर्पित करें और जल चढ़ाएं।

- हर मंगलवार और शनिवार ऊँ रामदूताय नमः मंत्र का जप करें। मंत्र जप की संख्या कम से कम 108 करे।

- धार्मिक आचरण बनाए रखें और किसी का अनादर न करें।

- हर शनिवार को शनि के निमित्त तेल का दान करें। तेल दान करने से पहले तेल में अपना चेहरा देख लेना चाहिए। यह उपाय हर शनिवार किया जाना चाहिए।

- शनि बीज मंत्र - ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः प्रतिदिन 108 बार अवश्य करें

- शनि प्रकोप से मुक्ति के लिए सुंदर काण्ड का नियमित पाठ अवश्य करें।

- रोटी में तेल लगाकर कुत्ते या कौए को खिलाएं।

रत्न उपाय विचार

वैदिक ज्योतिष के अनुसार ग्रहों से सूक्ष्म ऊर्जाओं का उत्सर्जन होता है, जिनका हमारी जन्म कुंडली में ग्रहों की स्तिथि के अनुसार, हमारे जीवन पर प्रतिवर्ती हितकारी अथवा अनिष्टकारी प्रभाव पड़ते हैं । प्रत्येक ग्रह का अपना एक अनूठा तत्सम्बन्धित ज्योतिषीय रत्न होता है जो उसी ग्रह के अनुरूप ब्रह्मांडीय वर्ण-ऊर्जा का प्रसार करता है । रत्न सकारात्मक किरणों के प्रतिबिंब या नकारात्मक किरणों के अवशोषण द्वारा अपना कार्य करते हैं । ये रत्न केवल सकारात्मक स्पंदनों को ही शरीर में प्रवेश करने देते हैं; इस कारण उपयुक्त रत्न पहनाने से उसके धारण कर्ता पर सम्बंधित ग्रह के लाभदायक प्रभाव को बढ़ाया जा सकता है ।

जीवन रत्न

मोती

लग्न, शरीर और शरीर से संबंधित सभी बातों का - जैसे स्वास्थ्य, दीर्घायु, नाम, प्रतिष्ठा, जीवन-उद्देश्य आदि का प्रतीक होता है। संक्षेप में, इस में पूरे जीवन का सार समाया है । इसलिए लग्न के स्वामी अर्थात लग्नेश से संबंधित रत्न को जीवन रत्न कहा जाता है । इस रत्न के गुणों तथा शक्तियों का पूरा लाभ उठाने के लिए इसे आजीवन पहना जा सकता है और पहनना भी चाहिए ।

कारक रत्न

मूंगा

जन्म कुंडली का पंचम भाव भी एक शुभ भाव है। पांचवा भाव बुद्धि, उच्च शिक्षा, संतान, अप्रत्याशित धन-प्राप्ति आदि का द्योतक है। इस भाव को 'पूर्व पुण्य कर्मों' का अर्थात पिछले जन्मों के अच्छे कर्मों का स्थान भी माना जाता है । इसी कारण इसे शुभ भाव कहते हैं । पंचम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को कारक रत्न कहा जाता है।

भाग्य रत्न

पुखराज

जन्म-कुंडली के नवम भाव को भाग्य या प्रारब्ध का स्थान कहा जाता है । यह भाव भाग्य, सफलता, ज्ञान, गुणदोष और उपलब्धियों आदि का द्योतक है । यह भाव व्यक्ति द्वारा पिछले जन्मों में किए गए अच्छे कर्मों के कारण प्राप्त होने वाले फल स्वरूप आनंद की ओर संकेत करता है । नवम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को भाग्य रत्न कहते हैं । इस रत्न को धारण करने से भाग्य में वृद्धि होती है ।

जीवन रत्न - मोती

विकल्प	चंद्रमणि	दिन	सोमवार
उंगली	अनामिका या कनिष्ठा	अधिदेवता	चंद्रमा
भार	5 - 7.25 कैरेट	धातु	चांदी

विवरण

मोती रत्न का स्वामी ग्रह चंद्र है। मोती धारण करने से धन, प्रसिद्धि और जीवन-शक्ति की प्राप्ति होती है। मोती धारण करने वाला व्यक्ति मेधावी होता है और दीर्घ जीवन जीता है।

भार व धातु

वजन में २, ४, ६ या ११ कैरेट का दोषरहित मोती पहनना चाहिए। इसे चांदी की अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए। अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके।

पहनने का समय

मोती को शुक्ल पक्ष के किसी भी सोमवार को सूर्योदय के बाद धारण किया जा सकता है।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें। मोती धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः

प्राण प्रतिष्ठा

अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, मोती को दाहिने हाथ की अनामिका (रिंग फिंगर) अथवा कनिष्ठा अंगुली में धारण किया जा सकता है।

विकल्प

मोती के स्थान पर चन्द्रकान्त मणि या सफ़ेद नीलम जैसे विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं।

सावधानी

ध्यान रहें कि मोती को हीरा, नीलम, पन्ना, लहसुनिया और उनके विकल्प रत्नों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

famouspandit.com

कारक रत्न - मूंगा

विकल्प	लाल सुलेमानी	**दिन**	मंगलवार
उंगली	तर्जनी	**अधिदेवता**	मंगल
भार	6 - 10.25 कैरेट	**धातु**	स्वर्ण

विवरण

लाल मूंगा का स्वामी ग्रह मंगल है । लाल मूंगा व्यक्ति को साहसी बनाता है और उसकी अपने दुश्मनों को पछाड़ने में सहायता करता है । लाल मूंगा दुष्ट आत्माओं, जादू-टोना और बुरे स्वप्नों से बचाता है ।

भार व धातु

लाल मूंगा का वजन ६ कैरेट से अधिक होना चाहिए । इसे सोने और तांबे के मिश्रण से बनी अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

लाल मूंगा रत्न चंद्रमास के शुक्ल पक्ष के किसी भी मंगलवार को सूर्योदय के एक घंटे बाद धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । लाल मूंगा धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

◌ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः

प्राण प्रतिष्ठा

लाल मूंगा की अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें ।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, लाल मूंगे की अंगूठी को दाहिने हाथ की अनामिका (रिंग फिंगर) में धारण करें ।

विकल्प

लाल मूंगा के स्थान पर संग मुंगी (संग-सितारा), कार्नेलियन और रेड जास्पर (सूर्यकांत मणि) जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं ।

सावधानी

ध्यान रहें कि लाल मूंगे को पन्ना, हीरा, नीलम, गोमेद, लहसुनिया और उनके विकल्प रत्नों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

भाग्य रत्न - पुखराज

विकल्प	टोपाज	दिन	गुरुवार
उंगली	तर्जनी	अधिदेवता	गुरु
भार	4 - 5.25 कैरेट	धातु	स्वर्ण

विवरण

पुखराज रत्न का स्वामी ग्रह बृहस्पति (गुरु) है । शुद्ध पुखराज दोषरहित , चमकदार, दीप्तिमान, स्पर्श करने में चिकना और उत्तम वर्ण का होता हैं । पुखराज धारण करने से अच्छे स्वास्थ्य, ज्ञान, संपत्ति, दीर्घायु, नाम, सम्मान और यश की प्राप्ति होती है । यह बुरी आत्माओं के कुप्रभाव से भी रक्षा करता है ।

भार व धातु

पुखराज का वजन ३ कैरेट से अधिक होना चाहिए; परंतु ६, ११ अथवा १५ कैरेट का न हो इस बात का ध्यान रखें । इसे सोने की अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

पुखराज रत्न को चंद्रमास के शुक्ल पक्ष के किसी भी गुरुवार की सुबह धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । पुखराज धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः

प्राण प्रतिष्ठा

पुखराज की अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें ।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, पुखराज को दाहिने हाथ की अनामिका (रिंग फिंगर) में धारण करें ।

विकल्प

पुखराज के स्थान पर पीला मोती, पीला जिक्रोन, पीली तूरमली, टोपाज़ और सिट्रीन (क्वाट्र्ज टोपाज़) जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं ।

सावधानी

ध्यान रहें कि पुखराज को हीरे, नीलम, गोमेद और लहसुनिया के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

नौ मुखी रुद्राक्ष

आपको नौ मुखी रुद्राक्ष को धारण करने की सलाह दी जाती है।

.

इसका स्वामी ग्रह केतु है। नौ मुखी रुद्राक्ष, दुर्गा देवी (शक्ति) का रुप है। यह आत्म-शक्ति बढ़ाता है। यह मुखी रुद्राक्ष केतु के दुष्प्रभावों को कम करने के लिए फायदेमंद है। केतु; फेफड़े, बुखार, आंखों के दर्द, आंत्र दर्द, त्वचा रोग, शरीर में दर्द आदि की बीमारियों को जन्म देता है। यह मन की शांति के लिए एकाग्रता और आध्यात्मिक जागृति के लिए उपयोगी है। यह धैर्य पैदा करने में मदद करता है, अनावश्यक क्रोध को नियंत्रित करने और निडरता की भावना को नियंत्रित करता है। यह माँ शक्ति को बहुत प्रिय है और देवी के भक्त द्वारा पहना जाता है। यह गर्दन पर या दाहिने हाथों पर पहना जा सकता है।

famouspandit.com

शुभाशुभ अंक

9	3	6
भाग्यांक	मूलांक	नामांक

आपका नाम	Sample Pdf
जन्म दिनांक	12-5-1990
मूलांक	3
मूलांक स्वामी	गुरु
मित्र अंक	7,5,6,9
सम अंक	1,2
शत्रु अंक	4,8
शुभ दिन	मंगलवार, गुरुवार, शुक्रवार
शुभ रत्न	पीला नीलम
शुभ उपरत्न	पुखराज, पीला तुरमली
शुभ देवता	विष्णु
शुभ धातु	सोना
शुभ रंग	पीला
शुभ मंत्र	|| ओम ह्रिंग गुरवे नमः ||

आपके बारे में

.

आपका मूलांक तीन हैं । मूलांक तीन का स्वामी गुरु है । गुरु ग्रह के प्रभाववश आप अनुशासन के मामले में काफी कठोर रहेंगे तथा अपने अधीनस्थों से सख्ती से कार्य लेंगे । काम में ढील या शिथिलता बर्दाश्त नहीं करेंगे । इस कारण कभी कभी आपके मातहत ही आपसे शत्रुता करने लगेंगे। आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे और दूसरों पर शासन करने की आपकी सहज इच्छा रहेगी । गुरु ग्रह के प्रभाववश आपकी विचारधारा धार्मिक रहेगी तथा विद्या, अध्ययन, अध्यापन, बौद्धिक स्तर क कार्य तथा धर्म - कर्म के क्षेत्र में आपको अच्छी उपलब्धियाँ एवं ख्याति प्राप्त होगी। मानसिक रूप से आप काफी संतुलित एवं विकसित व्यक्ति होंगे तथा किसी भी विषय को समझने की आप में विशेष क्षमता रहेगी। तर्क एवं ज्ञान शक्ति आपकी अच्छी रहेगी। आप मन से किसी का भी अहित नहीं करेंगे और दूसरों की भलाई करने में भी अपना समय देते रहेंगे। दान - पुण्य के कार्य भी आप काफी करेंगे। सामाजिक स्थिति आपकी काफी अच्छी रहेगी। समाज में आप अग्रणी एवं मुखिया पद का निर्वहन करना अधिक पसंद करेंगे। दूसरों को सच्ची सलाह देना आप अपना धर्म समझेंगे। स्वभाव से आप शांत, कोमल, ह्रदय, मृदुवाणी एवं सत्यवक्ता होंगे। सत्य के मार्ग पर आप चलते हुए कष्टों को भी सहन करेंगे एवं अंत में विजयश्री को प्राप्त करेंगे। स्वास्थ्य आपका साधारणतः अनुकूल ही रहेगा | लेकिन कभी - कभी मंदाग्नि, जठराग्नि, उदार विकार इत्यादि रोगों का सामना करना पड़ेगा।

शुभ व्रत समय

.

बृहस्पतिवार को बृहस्पति अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। बृहस्पतिवार को पीले वस्त्र धारण कर व्रत करें। पीला भोजन ग्रहण करें एवं पीले पदार्थों का दान करें। यह व्रत तीन वर्ष, एक वर्ष या सोलह बृहस्पतिवारों को करें। यथाशक्ति पुत्रजीवी की माला पर गुरु मंत्र का जप करें।

famouspandit.com

शुभ देवता

.

आप बृहस्पति ग्रह की उपासना करें अथवा विष्णु भगवान की आराधना करें। भगवान विष्णु के द्वादशाक्षरी मंत्र ' ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ' का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा पूर्णमासी के दिन सत्यनारायण कथा का श्रवण करेंगे तो इस क्रिया को करने पर आप विभिन्न रोगों और समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवान विष्णु के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

शुभ गायत्री मंत्र

.

आपके लिए गुरु के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु गुरु के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा। गुरु गायत्री मंत्र - ||ॐ अंगिरसाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात्त।|

शुभ ध्यान समय

.

प्रातः काल उठ कर गुरु का ध्यान करें, मन में गुरु की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात निम्न मंत्र का पाठ करें। देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसन्निभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।

famouspandit.com

शुभ मंत्र

.

अशुभ गुरु को अनुकूल बनाने हेतु गुरु के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सौ आठ माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे। ||ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः। जप संख्या 10000||

आपके के लिए शुभ समय

.

सूर्य 21 नवंबर से 20 दिसंबर तक धनु राशि में एवं 19 फरवरी से 20 मार्च तक मीन राशि में तथा 21 जून से 20 जुलाई तक कर्क राशि में पाश्चात्य मत से रहता है। भारतीय मत से यह 15 दिसंबर से 13 जनवरी तक धनु में एवं 14 मार्च से 12 अप्रैल तक मीन में तथा 16 जुलाई से 16 अगस्त तक कर्क राशि में रहता है। धनु एवं मीन राशियां गुरु का स्वस्थान अथवा अपना घर है। कर्क राशि गुरु का उच्च स्थान है। अतः उपर्युक्त समय में मूलांक तीन प्रभावियों के लिए सबसे अधिक प्रभावकारी एवं लाभप्रद समय रहता है। इस काल में कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य इत्यादि करना आपके लिए विशेष योगकारक रहेगा।

शुभ वास्तु

.

आपके लिए ऐसे मकान में रहना शुभ रहेगा जिसका मूलांक या नामंक 3 हो। ईशान कोण दिशा आपके लिए हमेशा शुभ रहेगी। अतः आप शहर की ईशान कोण दिशा में अपना निवास बना सकते हैं। इस दिशा में रोजगार - व्यापार संबंधी कार्य करना शुभ रहेगा। पहनने के वस्त्रों का चुनाव करते समय भूरा, पीला, सुनहरी रंगों के होने से आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा और यदि आप दीवारें, पर्दे, फर्नीचर का रंग भी ऐसा ही रखें तो आपके पारिवारिक वातावरण में खुशहाली आएगी।

famouspandit.com

लग्न फल - कर्क

स्वामी	चंद्रमा
प्रतीक	केकडा
विशेषताएँ	जल तत्त्व, चर, उत्तर
भाग्यशाली रत्न	हीरा
व्रत का दिन	शुक्रवार

देहं रूपं च ज्ञानं च वर्णं चैव बलाबलम् |
सुखं दुःखं स्वभावञ्च लग्नभावान्निरीक्षयेत ||

कैंसर राशि के व्यक्ति औसत से कम हौसले वाले, दूसरों के प्रति सहानुभूति रखने वाले,दयालु, धैर्यवान, सुस्त स्वभाव वाले,औरों का पालन-पोषण करने वाले, ग्रहणशील, रक्षात्मक , तीव्र , अस्थिर, मानसिक, भावनात्मक, अटल , कायर भावुक, शांत, संग्रह्शील (बिना ज़रूरत के भी सामान एकत्र करने वाले) और तुनकमिजाज होते हैं, और औसत से कम जिंदादिल होते हैं ।

केकड़ा कर्क राशि का प्रतिनिधित्व करता है,जैसे वो चलते समय कभी आगे और कभी पीछे देखता है, वैसे ही आप को एक ही समय में भविष्य और भूतकाल के विषय में सोचने की आदत है|

> “ आप पूरी तरह से भविष्य का सामना नहीं करना चाहते हैं और हमेशा अतीत के बारे में चिंतित रहते हैं और यह सोच कर कि भविष्य के गर्भ में क्या छिपा है,आप अधिक चिंतित रहते हैं।

आप का जीवन कभी भी सरल और सीधा नहीं होगा ,अपितु आप अलग और निराले ढंग से जीवन के रास्ते पर चलेंगे |

आप संवेदनशील हैं और संकट के समय पीछे हट कर अपने आवरण में चले जाते हैं । चाहे कोई महत्वहीन बात ही क्यों न हो,आप भावनात्मक रूप से आसानी से आहत हो सकते हैं, और आप परिस्थितयों को व्यक्तिगत रूप ले सकते हैं ।

famouspandit.com

आप को यात्रा में आनंद मिलता है , लेकिन आप के मन में घर वापसी का विचार सदा बना रहता है । सुरक्षा जीवन में आप के लिए सब कुछ है। भौतिक सुरक्षा तभी प्राप्त होती है यदि योजनाओं का आधार सुविधापूर्ण हो, और भावनात्मक सुरक्षा आपको अपनी उस संपत्ति और अनुरागों से मिलती है जो आपके लिए भावनात्मक रूप से महत्वपूर्ण हैं।

> वास्तव में, सभी भावनात्मक मूल्य और उनका महत्त्व आपके लिए सब कुछ है, आप सब कुछ रखना चाहते है। आप किसी विषय या व्यक्ति से एक बार जुड़ जाते हैं तो आप आसानी से उसे जाने नहीं देते है। जीवन में आप अपनी सोच से अधिक अपनी भावनाओं को स्थान देते हैं ।

आपका मिज़ाज ज्वार-भाटे की लहरों की तरह ऊपर और नीचे होता रहता हैं। चंद्रमा कर्क राशि का स्वामी है इसलिए चंद्रमा आपकी कुंडली में महत्वपूर्ण होगा।

ॐ

सीखने के लिए आध्यात्मिक सबक

विवेकशीलता (अपनी सीमाओं की पहचान)

सकारात्मक लक्षण

घरेलू | भावुक | अंतर्निहित मन | मेधावी

नकारात्मक लक्षण

संकोची | आत्मविश्वास की कमी | अधीर | अतिभावुक

आपकी कुंडली में ग्रहों का विश्लेषण

ज्योतिष के अनुसार सूर्य को सबसे शक्तिशाली ग्रह माना जाता है, यह जीवन का स्त्रोत है।सूर्य को स्वास्थ्य, जीवन शक्ति, ऊर्जा, शक्ति, पिता, सम्मान, प्रतिष्ठा, गौरव, प्रसिद्धि, साहस और व्यक्तिगत शक्ति काकारक कहा जाता है।

आपकी कुंडली में सूर्य ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि	अंश	नक्षत्र
मेष	**27:34:30**	**कृतिका - 1**
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
दूसरा भाव	**दसवां भाव**	**नहीं / मृत**

सूर्य आपकी कुंडली मे सम है

आपके जन्मपत्रिका में सूर्य दसवां भाव में एवं मेष राशि में स्थित है।

आप किसी जीनियस से कम नहीं हैं. आप सफलता और शक्ति प्राप्त करने की अभिलाषा रखते हैं . आप एक राजा की तरह आलीशान जीवन जीते हैं . आप अपने उदाहरण के माध्यम से दूसरों को प्रेरित करने की क्षमता रखते है. आप में अपनी पहचान बनाने की तृष्णा है - चाहे वह यश, सत्ता, राजनीति, अधिकार या उत्तरदायित्व के माध्यम से हो . आप एक उत्कृष्ट निष्पादक एवं प्रबंधक हैं. आप प्रबंधकारिणी शक्तियों, सामाजिक भूमिका, राजकीय और एकतंत्र प्रशासकीय कार्यों के लिए सबसे उपयुक्त हैं. आप हमेशा सर्वोच्च पद पर कार्यरत होते हैं . आप अपने सभी प्रयासों और उपक्रमों में सफल रहते हैं.

> " आप महत्वाकांक्षी, शक्तिशाली और बुद्धिमान व्यक्ति हैं.

आप दूसरों का अनुसरण नहीं करते, अपितु दुसरे आप का अनुगमन करते हैं.आप अच्छे स्वास्थ्य का आनंद लें पायेंगें . आपकी आर्थिक स्तिथि मजबूत रहेगी. विवाह अथवा व्यापारिक साझेदारी के माध्यम से संपत्ति हासिल होगी . आप को राज्य/सरकार की तरफ से लाभ और समर्थन प्राप्त होगा. सरकारी नौकरी में आप को उच्च पद प्राप्त हो सकता है . सेवकों और वाहनों का सुख मिलेगा . पिता या किसी वरिष्ठ व्यक्ति से सहयोग और समर्थन प्राप्त होगा .आपके जीवन में मानसिक चिंताएं रहेंगीं .

famouspandit.com

कई बार आप को अपने निकट और प्रिय लोगों से दूर रहना पड़ सकता है . काम में डूबे रहने की प्रवृत्ति के कारण शादीशुदा/पारिवारिक जीवन में कठिनाईयां उत्पन्न हो सकती है. साझेदार, साथी या मित्र से अलग होने की वजह से आप ग्लानि महसूस करते हैं. आप आम तौर पर दूसरों का शक करते हैं. आप बहुत अहंकारी और घमंडी हो सकते है. माता का स्वस्थ्य निरंतर चिंता का कारण बना रहेगा . काले और नीले रंग के कपड़ों से दूर रहें . शराब और मांसाहार के सेवन पर संयम रखें .

सूर्य मंत्र	**॥ ॐ ह्रीं ह्रौं सूर्याय नमः ॥**

चंद्रमा में मन, शक्ति और भावनाओं को प्रभावित करने की क्षमता है। चंद्रमा पानी और प्राकृतिक शक्तियों से जुड़ा हुआ है,यह एक ढुलमुल ग्रह है जो परिवर्तनों से संबंधित है। चंद्रमा भावनाओं, कल्पना, माता, हृदय, स्मृति, नींद, यात्रा, इच्छा, बचपन, बुद्धि से सम्बंधित है। चंद्रमा व्यक्ति कीइच्छाओं और पसंद से सम्बंधित है।

आपकी कुंडली में चन्द्र ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि	अंश	नक्षत्र
वृश्चिक	**24:38:32**	**ज्येष्ठा - 3**
स्वामी	**भाव में**	**अस्त/अवस्था**
पहला भाव	**पाँचवा भाव**	**नहीं / बाल**

चन्द्र आपकी कुंडली मे सम है

आपके जन्मपत्रिका में चन्द्र पाँचवा भाव में एवं वृश्चिक राशि में स्थित है।

आप काफी संवेदनशील और बुद्धिमान व्यक्ति हैं . आप में नेतृत्व के और आम जनता का विश्वास जीतने के गुण विद्यमान हैं . आपकी ज्वलंत कल्पनाशक्ति आपकी सर्जनशीलता को प्रोत्साहित करती हैं. आप अक्सर सपनों की दुनिया में रहते हो . आप में बच्चों का सा खुलापन और शोख़ी है जो दूसरों को बहुत आकर्षित करती है. आप अपने नए विचारों और सिद्धांतों के बल पर दुनिया को मुट्ठी में लेने के लिए तैयार रहते हैं. स्मृतियाँ आपके व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं.आप एक बहुत ही करिश्माई कलात्मक व्यक्ति हैं; भावनाओं को व्यक्त करने की प्रतिभा आप के अंदर भरी है - फिर चाहे वह अभिनय, प्रदर्शन कला, मनोरंजन अथवा लेखन का क्षेत्र हो .

> " आप में व्यावहारिक समझ का अभाव है; आपके दृष्टिकोण में विलक्षणता झलकती हैं .

कैरियर की दृष्टि से आप एक श्रेष्ठ बाल मनोवैज्ञानिक, अभिनेता, हास्य अभिनेता, भावनात्मक रोमांटिक लेखक, राजनेता, इत्यादि बन सकते हैं .अपना ध्यान अक्सर घरेलू चिंताओं पर केंद्रित रहता है. आप को अपने प्रियजनों से बहुत लगाव है - उनके साथ आप अपने भावुक अनुभवों को बांटते हैं ; उनके बारे में आप

famouspandit.com

बहुत ज्यादा चिंतित रहते हैं और हर तरह से उनकी सुरक्षा निश्चित करना चाहते हैं. आप को अपने पति या पत्नी से लाभ होगा. बच्चो के साथ आप बहुत जल्दी हिल मिल जाते हो. आपके बच्चें आपके जीवन के भावनात्मक केंद्र हैं. आप अपनी भावनाओं को अक्सर बच्चों, मनोरंजन, या रचनात्मकता के माध्यम से व्यक्त करते हैं.

यद्यपि आपको व्यापार में विशेष सफलता नहीं मिलेगी; लेकिन सरकार की ओर से लाभ तथा सम्मान निश्चित रुप से प्राप्त होंगें .जुए और इश्क़बाजी से दूर रहें. अपने शब्दों पर और आलोचना करने की आदत पर नियंत्रण रखें. अभद्र भाषा का उपयोग न करें . ज्यादा खाने की प्रवृत्ति से सतर्क रहें. यह आपके स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं को जन्म दे सकती है . जन कल्याण के कार्यों में सम्मिलित होना आप के लिए शुभ साबित होगा.

चंद्र मंत्र	**॥ ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः ॥**

famouspandit.com

ज्योतिष के अनुसार मंगल ग्रह हिम्मत और तानाशाही से सम्बंधित है। मंगल ग्रह को कार्य और विस्तार का ग्रह माना जाता है। मंगल, शक्ति, साहस, क्रोध, दुश्मन, हिंसा, छोटे भाई, बल, मांसपेशियों और वीरता से सम्बंधित है।

आपकी कुंडली में मंगल ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि **कुम्भ**	अंश **22:13:24**	नक्षत्र **पूर्व भाद्रपद - 1**
स्वामी **दसवां ,पाँचवा भाव**	भाव में **आठवाँ भाव**	अस्त/अवस्था **नहीं / वृद्ध**

मंगल आपकी कुंडली मे योगकारक है

आपके जन्मपत्रिका में मंगल आठवाँ भाव में एवं कुम्भ राशि में स्थित है।

तर्क-वितर्क और बहसबाज़ी से बचने का प्रयास करें. नेत्रहीन लोगों के लिए दान करें . आपकी उपचार या सर्जरी में रुचि हो सकती है. विवाह या विरासत धन लाभ के माध्यम बन सकते हैं . व्यावसायिक साझेदार के कारण वित्तीय समस्याएं आ सकती हैं . आप व्यावसायिक क्षेत्र में तो कामयाब होंगें; लेकिन रिश्तों में पर्याप्त संतुष्टि नहीं मिल पायेगी .

> " आप चिकित्सा, कानून और वित्त से जुड़े क्षेत्रों में सफल रहेंगें .

आपके निजी जीवन में प्रेम और स्नेह में की कमी हो सकती है . आपको अपनी कामुक इच्छाओं और अशिष्ट प्रकृति पर नियंत्रण रखना सीखना होगा . आप पैतृक संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं . आप भू संपत्ति से धन अर्जित करेंगे. आप को कानूनी मामलों में भी जीत हासिल होगी .

आप रक्त रोग, मधुमेह और बवासीर आदि समस्याओं से पीड़ित हो सकते है. गठिया और हड्डियों की बीमारियों भी मुसीबत बन सकती हैं .आप को चांदी की चेन पहननी चाहिए. पवित्र स्थानों पर जरूरतमंद लोगों को चावल, चना दाल और गुड़ दान करें . दक्षिण दिशा में दरवाजे पर चौकोर आकार का चांदी का एक टुकड़ा लटका दें .

मंगल मंत्र	**॥ ॐ हूं श्रीं भौमाय नमः ॥**

♉ बुध बुद्धि और शिक्षा का ग्रह है, यह भाषण और तर्क से सम्बंधित है और इस प्रकार व्यक्ति के संचार कौशल पर इसका प्रभाव पड़ता है। बुध स्मृति, भाषण, राजनीति, व्यापार और व्यापार, मित्रों, मामा, चाचा, भतीजे, दत्तक पुत्र और तर्क से सम्बंधित है।

आपकी कुंडली में बुध ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि	अंश	नक्षत्र
मेष	**15:02:50**	**भरणी - 1**
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
बारहवां ,तिसरा भाव	**दसवां भाव**	**नहीं / युवा**

बुध आपकी कुंडली मे हानिप्रद है

आपके जन्मपत्रिका में बुध दसवां भाव में एवं मेष राशि में स्थित है।

भाषा और संचार आपके जुनूनी शौक हैं . आप अधिकार के साथ बात करते हैं और आप में संतुलित तथा व्यवहारिक वार्ता का कौशल है . कुछ नया और रोमांचक की तलाश में आप अक्सर करियर बदलते रहते हैं . आप ऐसे व्यवसायों की ओर खिंचे चले जाते हैं जहाँ आप को विश्लेषण और संगठन करने तथा स्वतंत्र रूप से बोलने के अवसर मिलें . आप अपने पेशे में वाणी तथा लेखन का भरपूर प्रयोग कर सकते हैं . अध्यापन के क्षेत्र में आप का भविष्य उज्जवल हो सकता है . आप में कई प्रतिभएँ विद्यमान हैं, जिस वजह से आप एक साथ कई कार्यों में संलग्न हो सकते हैं . दलाली, प्रोफेसरी, पत्रकारिता, वकालत, ज्योतिष, लेखांकन, विज्ञापन, इंजीनियरिंग आदि क्षेत्रों में आपको यश प्राप्त होगा. आप कंप्यूटर, संगीत वाद्ययंत्र, रेडियो, टेलीविजन, इलेक्ट्रॉनिक आइटम आदि के व्यापार में उत्कृष्ट सफलता प्राप्त कर सकते हैं.

> “ आपकी मानसिक सतर्कता और निपुणता तथा नेतृत्व के गुण आप की मुख्य पूंजी हैं .

आपके व्यवसाय में निरंतर भ्रमण करते रहने की संभावना है . अपनी विस्तृत बुद्धि और कुशल संचार कौशल के बल पर अपने लिए निर्धारित किसी भी

कैरियर में बहुत सफल होंगें . आप को जीवन में सम्मान, सत्ता, रुतबा, पद प्राप्त होंगें . आप साहसी, निर्मल मन और अच्छे आचरण वाले व्यक्ति हैं . आप कई विषयों की जानकारी रखते हैं . आप अपने मधुर स्वभाव और महान कार्यों के लिए लोकप्रियता हासिल करेंगे . आपके कई मित्र तथा समर्थक होंगें . आप को विरासत में पैतृक संपत्ति मिलने की संभावना है आप अपने स्वयं के प्रयासों से अच्छे घर का निर्माण कर पायेंगें .

आप वैवाहिक जीवन और मानसिक सुख का आनंद उठा पायेंगें . दमा, हर्निया, गुर्दे और पेट से संबंधित रोग आप को परेशान कर सकते हैं . हवाई और समुद्री यात्रा आप के लिए हानिकारक साबित हो सकती हैं . मांसाहार और शराब का सेवन न करें . धार्मिक स्थानों में चावल और दूध का दान दें . अपने घर को किराए पर मत दें . अपने घर के ईशान कोण (उत्तर पूर्वी कोने) में एक तुलसी का पौधा अवश्य लगाएं. .

बुध मंत्र	**॥ ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः ॥**

बृहस्पति को मंत्रि ग्रह माना जाता है जो ज्ञान, खुशी और अच्छे भाग्य से संबंधित है। बृहस्पति धन, ज्ञान, गुरु, पति, पुत्र, नैतिक मूल्यों, शिक्षा, दादा दादी और शाही सम्मान का कारक है। यह धार्मिक धारणा, भक्ति और लोगो के विश्वास को दर्शाता करता है।

आपकी कुंडली में गुरु ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि	अंश	नक्षत्र
मिथुन	**15:12:56**	**आर्द्रा - 3**
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
छठा ,नौवां भाव	**बारहवां भाव**	**नहीं / युवा**

गुरु आपकी कुंडली मे लाभप्रद है

आपके जन्मपत्रिका में गुरु बारहवां भाव में एवं मिथुन राशि में स्थित है।

आप एक रचनात्मक विचारक हैं और एक अत्यत रूमानी व्यक्ति हैं. आप बहुत ईमानदार हैं . आप दूसरों की राय से जल्द ही प्रभावित हो जाते हैं. आप में आत्मविश्वास और इच्छा शक्ति की कमी है . आप अपनी खुद की प्रतिभा और क्षमता को पहचान पाने में असमर्थ हैं . आप कभी कभी अयथार्थवादी बन जाते हो . कोई भी कार्य करने या निर्णय लेने से पहले आवश्यक है कि आप उसपर अच्छी तरह सोच विचार कर लें . आप अनावश्यक मुद्दों पर अपना समय और ऊर्जा बर्बाद कर सकते हैं .आप को सृष्टि और मानवजाति दोनों पर दृढ़ अंतर्भव विश्वास है .

> “ आप परोपकारी होने साथ साथ भविष्य के प्रति आशावादी हैं.

आप को ज्योतिष और खगोल विज्ञान में रुचि हो सकती है . दूसरों की सहायता करने में आप अग्रसर रहते हैं, विशेष रूप से परेशान, मूक और असहाय लोगों की . आप अस्पताल या जेल में कार्यरत हो सकते हैं . आप को सृष्टि और मानवजाति दोनों पर दृढ़ अंतर्भव विश्वास है . आप को ज्योतिष और खगोल विज्ञान में रुचि हो सकती है . आप को पर्यटन, परिवहन, कानूनी और धार्मिक गतिविधियों से लाभ होगा . आपके जीवन में प्रगति बहुत धीरे धीरे होगी. आप बहुत

महत्वाकांक्षी नहीं हैं . जीवन के मध्य काल में सफल मिलने की संभावना है .

आपका व्यक्तिगत जीवन स्थिर नहीं होगा. आप का अपने पिता के साथ मतभेद होगा . आपका पारिवारिक जीवन तनाव और समस्याओं से भरा होगा . आपके घर में धन, स्नेह की और शांतिपूर्ण एवं सहयोगात्मक वातावरण की कमी हो सकती है .आपको नेत्ररोग, दमा, सिरदर्द, हृदय रोग और गले के संक्रमण की शिकायत हो सकती हैं. अनावश्यक यात्राओं पर पैसा बर्बाद करने से बचें . किसी भी मामले में झूठी गवाही ना दें. अपने बिस्तर के सिरहाने पानी व सौंफ रखकर सोया करें .

गुरु मंत्र	**॥ ॐ ह्रीं क्लीं हूं बृहस्पतये नमः ॥**

♀ वीनस कामुक सुख और कामुक आवेगों से सम्बंधित है। चमक और जीवन शक्ति का ग्रह होने के नाते भौतिकवाद और मांस के आनंद को दर्शाता है। वीनस को यौन इच्छाओं (काम), कामेच्छा, पत्नी का महत्व का कारक माना जाता है। यह जुनून, विवाह, लक्जरी लेख, गहने, वाहन, आराम और सुंदरता से संबंधित है।

आपकी कुंडली में शुक्र ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि	अंश	नक्षत्र
मीन	**15:26:30**	**उत्तर भाद्रपद - 4**
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
ग्यारहवाँ ,चौथा भाव	**नौवां भाव**	**नहीं / युवा**

शुक्र आपकी कुंडली मे हानिप्रद है

आपके जन्मपत्रिका में शुक्र नौवां भाव में एवं मीन राशि में स्थित है।

आप का चेहरा स्नेहशील और मुस्कुराता हुआ है. आप विनम्र, नेकदिल और कई कलाओं के ज्ञाता हैं. आप स्वतंत्रता या असीमितता में विश्वास रखते हैं . आप को यात्रा करना बहुत पसंद है . आप अपने जन्म स्थल से दूर रहेंगें . आप अपने सभी व्यवहार में निष्पक्ष और विधिसम्मत होते हैं . धर्म, संस्कार, दर्शन, कानून और उच्च शिक्षा के प्रति आप के मन में प्रेम और आकर्षण हो सकता है . आप को फटे में टांग अड़ाने की आदत हैं; दूसरों को बिनमांगी मदद देने के चक्कर में कई बार आप खुद मुसीबत में फँस जाते हैं .

> " आप कला और संगीत के पारखी हैं.

आप काफी जिद्दी और हठी हो सकते हैं .आप विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोगों को आकर्षित करते हैं . विभिन्न सांस्कृतिक समूहों केबीच सहमति और तालमेल बैठने की क्षमता आपमें हैं . विदेशी संस्कृतियों का सौंदर्य, कला और संगीत आपको आकर्षित करते हैं. आप साहसी साथी की ओर मोहित हो जाते हैं . आप की अपने भावी जीवनसाथी से विदेशी भूमि पर मुलाकात हो सकती हैं. आप की पति/पत्नी आप से अलग पृष्ठभूमि और संस्कृति के हो सकते हैं. आप

अपने ससुरालवालों के साथ लाभदायक और सौहार्दपूर्ण रिश्तों का आनंद ले पायेंगें .

आप किसी एक पद या स्तिथि में बंधें नहीं रह सकते हैं . इसलिए आप नौकरियां बदलते रहते हैं . आप को खेतीबाड़ी, धार्मिक अनुष्ठान, इत्र, घर की सजावट, गहने, रेशम के कपड़े और ऑटोमोबाइल के उत्पादन से संबंधित व्यवसायों से लाभ होगा. आप लोक व्यवहार में दक्ष हैं और एक अच्छे सलाहकार भी हैं . आप विशेष रुप से मनोविज्ञान, कानून और चिकित्सा जैसे मामलों में अनौपचारिक परामर्श दे सकते हैं . आप संचार या प्रकाशन में भी संलग्न हो सकते हैं.प्राय: आपका स्वस्थ अच्छा रहेगा; हाथ पैर तथा पेट सम्बन्धी शिकायत हो सकती हैं. घर की नींव में चांदी की डिब्बी में शहद भरकर दबा दें .

शुक्र मंत्र	**|| ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः ||**

शनि एक धीमी गति का ग्रह है। इसे न्याय, तर्क और विनाशकारी शक्तियों का ग्रह कहा जाता है। यह आपदाओं और मृत्यु से संबंधित है। शनि को एक शिक्षक के रूप में भी माना जाता है। शनि लंबी उम्र से सम्बंधित है। यह देरी, अवरोध, दु: ख, नुकसान, चोरी, बुढ़ापे, दु: ख, प्रतिकूलता और आजादी सेसम्बंधित है।

आपकी कुंडली में शनि ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि	अंश	नक्षत्र
मकर	**01:34:11**	**उत्तर षाढ़ा - 2**
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
सातवाँ ,आठवाँ भाव	**सातवाँ भाव**	**नहीं / मृत**

शनि आपकी कुंडली मे हानिप्रद है

आपके जन्मपत्रिका में शनि सातवाँ भाव में एवं मकर राशि में स्थित है।

आप एक अनासक्त व्यक्ति हैं . आप एकांकी जीवन जीना पसंद करते हैं . आप कभी कभी बहुत ही आलसी हो जाते है . आपके रिश्तों में प्रतिबंध, अवसाद और चिंता की भावनायें उपस्थित हो सकती है . आप को दूसरों के साथ सहयोग करने और उनके प्रति उदार रहने की जरूरत है .आप व्यवसाय में समृद्धि प्राप्त करेंगें . अपने पेशे में, आप बहुत ऊंचाइयों तक जायेंगें और धन भी अर्जित करेंगें . लेकिन ध्यान रखें, कोई भी गलत कदम आपके कैरियर या व्यवसाय का अंत कर सकता है .

> “ आप अपने जन्मस्थान से दूर रहेंगें, तो आपका भाग्य चमकेगा.

आप को निश्चित रूप से नकली गहने या नकली सोने के उत्पादों से जुड़े काम में बड़ी सफलता प्राप्त होगी . लाभ प्राप्त करने के लिए कपट और ठगी से दूर रहें . व्यसनों के कारण धन की हानि हो सकती है . आपके साझेदार अक्सर प्रौढ़ और गंभीर व्यक्ति होते हैं . भागीदारी में आपको अधिक जिम्मेदारी और कड़ी मेहनत से काम करना होगा .विवाह के बारे में आप सतर्क रहते हैं . विवाहित जीवन में असंतोष और कष्ट का अनुभव हो सकता है . आपकी राय में, आपका जीवन

famouspandit.com

साथी बहुत बुद्धिमान नहीं है; इसी कारण आपके अपने पति या पत्नी के साथ तनावपूर्ण संबंध हो सकते है .

आपका जीवनसाथी एकांतप्रिय, निरुत्साही और संकीर्ण तथा आलोचनात्मक दृष्टिकोण वाला हो सकता है . आपके पति/पत्नी को जोड़ों में दर्द या सिर दर्द से संबंधित कुछ स्वास्थ्य समस्या हो सकती हैं . हो सकता है कि आप शादी के बाहर संबंध तलाशें . शादी आपको सुरक्षितता का एहसास प्रदान करती हैं . आपको अपने रिश्तों में अनुशासन की जरूरत है . महिला जातको में पिता तुल्य व्यक्ति से विवाह करने की अवचेतन इच्छा हो सकती है . विधवा या विधुर से विवाह होना संभव है.किसी एकांत स्थान पर चीनी से भरी एक बांस की छड़ी गाढने से वैवाहिक और व्यवसायिक समस्याओं से आपको तत्काल राहत मिलेगी .

शनि मंत्र	**|| ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः ||**

अजीब और अपरंपरागत ग्रह होने के कारण राहु भौतिकवाद से सम्बंधित है और कठोर वाणी, कमी और इच्छा से सम्बंधित है। राहु को ट्रान्सेंडैंटलिज्म का ग्रह कहा जाता है। यह विदेशी भूमि और विदेशी यात्रा से सम्बंधित है।

आपकी कुंडली में राहु ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि **मकर**	अंश **17:47:00**	नक्षत्र **श्रावण - 3**
स्वामी **तिसरा भाव**	भाव में **सातवाँ भाव**	अस्त/अवस्था **नहीं / युवा**

आपके जन्मपत्रिका में राहु सातवाँ भाव में एवं मकर राशि में स्थित है।

आप एक शांतिप्रिय व्यक्ति हैं . आप को आलोचना से घृणा है. आप अपने दुश्मनों पर विजयी होते हैं . आप प्रतिष्ठा हासिल करने के लिए महत्वाकांक्षी हैं . आप घूमने-फिरने और नए मित्र बनाने के शौकीन हैं . आप कौशलपूर्ण हैं तथा प्रसिद्धि और समृद्धि प्राप्त करेंगें. आप एक शंकालु व्यक्ति हैं . आप गिरगिट की तरह रंग बदल सकते हैं.आप समझौता वार्ता, संतुलन और सलाह देने वाली भूमिकाओं में - विशेषकर राजनयिक, भागीदार, दलाल, सलाहकार, वकील, आदि के रूप में सफल रहते हैं . सरकार के साथ आप के अच्छे संबंध होंगें .

> “ आप में दूसरों पर हावी होने और प्रतिशोधक होने की परिवृत्ति है .

आप स्वर्णकार, केमिस्ट और ट्रेवल एजेंट जैसे व्यवसायों के माध्यम से धन अर्जित करने में सक्षम हैं . व्यक्तिगत संतुष्टि के उद्देश्य से आप अपने काम में कई बार बदलाव लाते हैं . ३० वर्ष की आयु के बाद ही आप को अपने पेशे में सफलता मिलेगी .आपका बचपन समस्याओं से भरा हो सकता है . आप ऐसे साथियों से संबंध बनाते हैं जो अक्सर बहुत अवांछनीय, झगड़ालू, असाधारण और जिद्दी होते हैं . आप के लिए वैवाहिक जीवन बहुत अनुकूल नहीं होगा . आप को अपने साथी से जुदाई, तलाक या अलगाव का सामना करना पड़ सकता है . आपके दो विवाह भी संभव हैं . आप के विवाहेतर संबंध हो सकते हैं जिस वजह से आप बदनाम भी हो सकते हैं .

आपके जीवनसाथी को जननांगों में संक्रमण से सावधान रहना चाहिए . आपको पति या पत्नी, अधिक शत्रुता, व्यापार में नुकसान जैसे कारणों से परेशानियां हो सकती हैं .आप जनन - मूत्र व्याधियों से ग्रस्त हो सकते हैं . आपको शरीर में दर्द की शिकायत भी हो सकती हैं . आप पेट के रोग, दिल की समस्या,

famouspandit.com

बवासीर और साइटिका से पीड़ित हो सकते हैं . डॉक्टर आसानी से आपके रोग का निदान नहीं कर पायेंगें .आयु के २१वें वर्ष से पहले शादी न करें; यह शुभ नहीं होगा . घर में पालतू जानवर रखने से बचें . नीले रंग के कपड़े न पहनें .

राहु मंत्र	**॥ ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः ॥**

केतु मोक्ष, पागलपन का ग्रह है। यह आध्यात्मिकता से सम्बंधित है। केतु रहस्यमय, भ्रामक, गुप्त और पेचीदा ग्रह है। केतु दर्द, रहस्य, गुप्त विज्ञान, उदासीनता, दर्शन, अलगाव और कारावास का प्रतीक है।

आपकी कुंडली में केतु ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशि	अंश	नक्षत्र
कर्क	**17:47:00**	**अश्लेषा - 1**
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
नौवां भाव	**पहला भाव**	**नहीं / युवा**

आपके जन्मपत्रिका में केतु पहला भाव में एवं कर्क राशि में स्थित है।

आप एक शांत और स्थिर स्वभाव के व्यक्ति हैं . आप बिना किसी को बताये चुपचाप अपना काम करते रहते हैं . आप अत्यधिक ऊर्जावान हैं . परन्तु आप का शरीर दुबला हो सकता है . हालांकि आप का दिमाग मजबूत है, आप में विश्वास की कमी है . आप में तेज बुद्धिमत्ता है . आप चतुर और बुद्धिमान हैं; फिर भी आप अधिकतर घबराये हुए, बेचैन और परेशान रहते हैं . आपका बचपन अपने माता-पिता से दूर रहने में बीता होगा . इसी कारण आप दुखी और एकांतप्रिय हो जाते हैं . आप अक्सर दूसरों के द्वारा शोषित होते हैं .

> " आप आक्रामक मनोदशा वाले एक सज्जन हैं .

जीवन में आप को कई अवसर प्राप्त होंगें - लेकिन बाधाओं के बिना नहीं . आप निश्चित रुप से, लेकिन धीरे - धीरे प्रगति करेंगें . आप बहुत जल्दी उत्साहित हो जाते हैं . आप श्रमशील और धनवान रहेंगें; लेकिन हमेशा संतानके कारण चिंतित होंगें.आप एक घुमक्कड़ हैं; आप एक स्थान पर ज्यादा देर तक स्थिर नहीं रह पाते . आपको कई भाषाओं का ज्ञान होगा . आप एक हरफनमौला हैं . आप की साहित्य और संगीत में रुचि है . आप चिकित्सा, शिक्षण, स्टेशनरी आदि क्षेत्रों में अपना कैरियर बना सकते हैं .

किसी भी उपक्रम में असफल होने पर आप जल्द ही परेशान हो जाते हैं . आप में नुक्ताचीनी करने और दोष निकलने की आदत हो सकती हैं . आप एक ज़बर्दस्त झूठे और कृतघ्न व्यक्ति हो सकते हैं . आप को बहुत ही कम उम्र में आँख का चश्मा पहनना पड़ सकता है . आप हथेलियों पर पसीना आना, उदर संबंधी समस्याओं, पीठ दर्द, पेट में दर्द, आदि से पीड़ित हो सकते हैं . आप के जीवन साथी को कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है .

संतान प्राप्ति या बच्चों के स्वास्थ्य में भी समस्या हो सकती है .माथे पर केसर तिलक लगाएं . भोर और गोधूलि के समय कभी दान या भीख न दें .

केतु मंत्र	**|| ॐ ह्रीं ऐं केतवे नमः||**

Pandit Karan Sharma is the best astrologer who has the knowledge about how those planets are affecting our life. There are many such situations in which he has brought his clients out.

Astrologer Karan Sharma
WORLD'S BEST ASTROLOGER & PANDIT
(ISO 9001 : 2015 CERTIFIED ASTROLOGER)
panditkaransharma@gmail.com
+91-9915014230